Annual Susbscription fee 100/ 3rd August 2015

ओ३म्

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

पौधा लगाएं-बृहद यज्ञों का आयोजन करें

श्रावणी मास में

घर-घर में यज्ञ के आयोजन के साथ पौधा लगाने को प्रेरित करें

पेड़-पौधे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है शुद्ध वायु और वर्षा के लिए महायज्ञों के साथ पेड़ लगाए

हरित महायज्ञ के अंतर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना के प्रधान श्री विठ्ठलराव आर्य ने राष्ट्रपति रोड़ आर्य समाज द्वारा संचालित हिन्दी महाविद्यालय एवं सरस्वति कन्या विद्यालय के प्रांगण में विद्यालय की स्थापना के ६० वर्ष पूरे होने के सन्दर्भ में पौधा लगाकर नए भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्यों-विद्यार्थियों के साथ-साथ कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान डॉ.टी.वी. नारायणजी, आर्य समाज राष्ट्रपति रोड़ के प्रधान श्री मामिडी श्रीनिवासजी, समाज के अधिकारियों में श्री वेंकटेशमजी मंत्री, श्री माशेट्टी श्रीनिवासजी, श्री सत्तय्याजी, श्री सालिके प्रकाशजी आदि उपस्थित थे। इन सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने भी पौधे लगाकर हरित महायज्ञ को आगे बढाया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री विठ्ठल राव आर्य ने अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को सम्वोधित करते हुए कहा कि प्राणी कोठी के लिए अग्नि, वायु, जल, पृथिवि

पौधा लगाते हुए प्रधान सभा श्री विठ्ठल राव आर्य साथ में सिकिन्द्राबाद आर्य समाज के अधिकारी देखे जा सकते है।

एवं आकाश की अत्यन्त आवश्यकता है। ब्रह्माण्ड में यह महायज्ञ परमात्मा ने आरम्भ किया है। जीवन की आवश्यकताओं में वायु, जल, आहार बहुत ही प्रमुख है और इन सबको सन्तुलित रखकर जीवन को आगे बढाने में अग्नि महत्वपूर्ण कार्य करती है। अतः सूर्य की किरणों के बिना न आहार की उत्पत्ति हो सकती है और न ही वायु और जल की। आदमी और हर प्राणी का जीवन जल, जमीन, जंगल (अर्थात पेड़-पौधे) और उर्जा तथा वायु पर टिका हुआ है। वर्षा के लिए जंगलों का होना या बहुतायत में पेडों का

पौधा लगाते हुए मामिडि श्रीनिवासजी

होना बहुत ही आवश्यक है । जंगल एवं पेड़ पौधों से जहां सकाल में वर्षा होती है वही पर शुद्ध वायु (Oxygen) के लिए भी पेड़ पौधों की, जंगलों की आवश्यकता हैं । यूं कह सकते है की बिना पेड़-पौधों के न शुद्ध वायु मिल सकती है और नहीं समय पर वर्षा के माध्यम से पानी इसी लिए हर व्यक्ति का जीवन में महत्वपूर्ण कर्तव्य होना चाहिए कि वह कम से कम एक पौधा लगाए और उसे पेड़ में बदलने तक

सभा को सम्बोधित करते हुए प्रधान सभा

जिम्मेवारी निभाएं । घर में पैदा हुए नन्हें से शिशु की जैसे देखभाल किया जाता है उसी प्रकार पौधे को लगाने के बाद उसकी छोटे बच्चे की तरह देखभाल करें । इसमें आपका कोई खर्च नहीं पर जिम्मेवारी जरूर हैं । जीवन में किसी भी काम के प्रति अगर जिम्मेवारी नहीं ली जाती है तो वह खुद के प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति और राष्ट्र के प्रति गैर जिम्मेवार वह बोझ बन जाता है । ऐसा व्यक्ति राष्ट्र व समाज द्रोही है अतः हर व्यक्ति को अपने जीवन का अनिवार्य अंग समझ कर पौधा लगाना चाहिए और उसे पेड़ बनाना चाहिए । इसके बिना न जीवन है और नही प्राणी कोटी का अस्तित्व है । प्रधान सभा ने उपस्थित सभी आचार्यों, विद्यार्थियों, गणमान्य व्यक्तियों से परमात्मा के नाम पर संकल्प करवाया कि हम कम से कम एक पौधा लगाएंगे और अन्य जनों से, मित्रों से एक पौधा लगवाएंगे तथा पूरी देखभाल करेंगे । श्रावणी के संदर्भ में आर्य समाज के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं से उन्होंने अपील की कि वर्षा के लिए यज्ञों के आयोजन के साथ-साथ पेड़ पौधे लगाएं । समाज के प्रांगण हो, या अपने-अपने घरों के प्रांगण में हो या सार्वजनिक स्थानों में जहां पर पौधों की सुरक्षा की जा सकती है और सुलभ भी हो वहां पौधे अवश्य लगाएं । किसी संस्था (विद्यालय, गुरुकुल आदि) के पास अधिक ज़मीन हो तो एकड़-दो एकड़- तीन एकड़ में तथा इससे भी अधिक ज़मीन में सैकड़ों पौधे लगाएं और बाग-बगीचों में बृहद महायज्ञों का आयोजन करे जिससे वर्षा हो सके और पानी की कमी को दूर किया जा सके साथ ही वातावरण में दिन-प्रति दिन बढ़ रहे वायु प्रदूषण को कम किया जा सके । आर्य समाज इस अभियान को करोड़ों में पौधे लगाने के अभियान के रूप में यज्ञ के साथ-साथ ले जिस से ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने की महत्वपूर्ण पहल माना जाए । आर्य समाज की इस पहल को विश्व का हर समुदाय, हर सरकार स्वागत करेगी । बस सिर्फ पहल करने की जरूरत है । कार्य रूप देने की जरूरत है । आंदोलन बनाने की जरूरत है । ज्ञान-विज्ञान का प्रसार या वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार केवल बौध्दिक बहस बाज़ी का अंग न बने । यह आचरणात्मक बने । सार्वजनिक कार्य बनें । पौधा लगाना परमात्मा की उपासना का प्रतीक बने । यज्ञ का सहायक बने । वर्षा

पौधा लगाते हुए माशेट्टि श्रीनिवासजी

पौधा लगाते हुए पूर्व अध्यापिका

पौधा लगाते हुए श्री सत्तय्याजी

पौधा लगाते हुए सालिके प्रकाशजी

का सहायक बने । पेड़ पौधा और यज्ञ का गठजोड़ एक निश्चित परिणाम की ओर ले जाएगा जिससे सुखःशान्ति के साथ-साथ आत्मिक शान्ति भी मिलेगी और राष्ट्रों तथा परिवार के आर्थिक बोझ को कम करेगा। सरकारों को भी श्वास लेने की राहत मिलेगी ।

-विठ्ठल राव आर्य

'मैं ब्रह्म नहीं अपितु एक जीवात्मा हूं'

(Brahma-jeevatma 29- 7-15)

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मैं कौन हूं? यह प्रश्न कभी न कभी हम सबके जीवन में उत्पन्न होता है। कुछ उत्तर न सूझने के कारण व अन्य विषयों में मन के व्यस्त हो जाने के कारण हम इसकी उपेक्षा कर विस्मष्त कर देते हैं। हमें विद्यालयों में जो कुछ पढ़ाया जाता है, उसमें भी यह विषय व इससे सम्बन्धित ज्ञान सम्मिलित नहीं है। इसका कारण यह है कि जिन लोगों के धर्मग्रन्थों में इस प्रश्न का यथार्थ उत्तर नहीं है वह इसके अध्ययन को साम्प्रदायिकता कह कर विरोध शुरू कर देते हैं। अतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न होने पर भी यह अधिकांश के लिये सारा जीवन विस्मष्त, उपेक्षित व अनुत्तरीय ही बना रहता है। अद्वैतवाद के मानने लोग यदा–कदा यह भ्रम फैलाते रहते हैं कि जीवात्मा ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का अंश वा साक्षात् ब्रह्म ही है। उनरके अनुसार इस सारे संसार में केवल एक ही सत्ता है और वह ईश्वर है। हमें आंखों से जो संसार दिखाई देता है, वह स्वप्नवत् है, यथार्थ नहीं है। उनके अनुसार आंखों से दीखने व अनुभव होने वाले संसार का अस्तित्व ही नहीं है। जीवात्मा को जब ज्ञान हो जायेगा तो वह ईश्वर में मिल जायेगा अर्थात् उसका अस्तित्व ईश्वर में विलीन होकर वह ईश्वर हो जायेगा। यह बात कहने में तो अच्छी दिखाई दे सकती है परन्तु यह सत्य नहीं है। हम निर्भ्रान्त रूप से अनुभव करते हैं कि हम एक चेतन सत्ता है। हमें सुख व दुःख की अनुभूति होती है। जिसे सुख व दुःख की अनुभूति होती है वह चेतन सत्ता होती है। इस प्रकार से संसार में पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि नाना प्रकार के सभी प्राणी एक चेतन तत्व 'जीवात्मा' से संबद्ध हैं। जब तक जीवात्मा उन उन प्राणियों के शरीरों में होती है, तब तक वह जीवित रहकर अपने अपने कर्म करते हैं, जीवात्मा के पष्थक होने पर उनकी मष्त्यु हो जाती है और उनके शरीर कारण तत्व अर्थात् पंच तत्वों में विलीन हो जाते हैं।

चेतन व जड़ दो प्रकार के पदार्थ हमें संसार में दिखाई देते हैं। भौतिक पदार्थ मूल तत्व प्रकषति के विकार हैं। यह भौतिक पदार्थ चेतन न होकर जड़ हैं। जड़ पदार्थों को सुख व दुःख तथा अच्छा व बुरे की प्रतीती नहीं होती। न्याय दर्शन के अनुसार आठ प्रमाणों से परीक्षा करने पर प्रकषति चेतन तत्व से पष्थक एक जड़ तत्व निश्चित व सिद्ध होता है। हम भौतिक पदार्थो से निर्मित शरीर व जीवात्मा का संयुक्त संगठित रूप हैं। शरीर में आंख, नाक, कान आदि पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां तथा अन्तःकरण में मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार अवयव हैं जो अपना अपना कार्य करते हैं। शरीर में नाना प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण अनेक अवयव हैं जो ईश्वरीय सत्ता से संचालित होकर अपने–अपने कार्य को स्वतन्त्रता पूर्वक करते हैं। यह सभी हमारे भौतिक जड़ शरीर के अंग व अवयव हैं। हमारे इस शरीर में ही एक चेतन तत्व जीवात्मा है जो मन को प्रेरित कर इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान व सुख–दुःख की अनुभूतियों को ग्रहण करता है। आंखों से अच्छे दष्श्य भी देखे जाते हैं व बुरे भी तथा कान से विद्या व ज्ञान से सम्बन्धित पवित्र शब्द भी सुने जाते हैं और मन को विकारयुक्त करने वाले बुरे शब्द भी। इसी प्रकार से अन्य तीन इन्द्रियों से भी अच्छे व बुरे ज्ञान व अनुभूतियों को ग्रहण किया जाता है। जो मनुष्य अपने माता–पिता व आचार्य के द्वारा अथवा सद्ग्रन्थों के द्वारा यह निश्चय कर लेता है कि कभी कोई बुरा कार्य नहीं करना है तो वह उन्नति को प्राप्त होता है और जो बुरे कार्यों को करता है, वह अवनति को प्राप्त करता है। मनुष्य छुप कर बुरे कार्यों को करता है और सोचता है कि मुझे किसी ने नहीं देखा, अतः मुझे दण्ड नहीं मिलेगा परन्तु यह उसकी अज्ञानता व भूल होती है। वह सांसारिक लोगों से भले ही अपने बुरे कार्यों व पापों को छुपा ले, परन्तु इस संसार को बनाने व चलाने वाली तथा जीवात्माओं को शरीरों से संयुक्त करने वाली वा जन्म देने वाली सत्ता सर्वान्तर्यामी होने के कारण हर क्षण हमारे समस्त कर्मों को जानती व देखती है। हमारे मन की सभी भावनायें भी उस सर्वान्तर्यामी सत्ता से छुपी वा अविदित नहीं रहतीं। यह सर्वान्तयामी सत्ता ईश्वर कर्मफल दाता शक्ति भी है जो यथासमय जन्म–जन्मान्तर में हमें हमारे अच्छे व बुरे कर्मों का न्यायोचित व निष्पक्ष रूप से यथायोग्य जीव–जन्म–योनि व सुख–दुःख रूप में फल देती है। अतः दुःखों से बचने के लिए जीवात्मा व मनुष्य को एकान्त में भी कोई बुरा विचार व कार्य नहीं करना चाहिये। यदि कोई सुख व उन्नति करना चाहता है तो उसे अपने अन्दर व बाहर से बुरे विचारों से दूर हटा कर ईश्वर का अर्थ ज्ञान सहित नाम स्मरण व वैदिक कर्मों के अनुरूप विद्या व ज्ञान से पूर्ण कर्मो को ही करना चाहिये।

हमने जड़ व चेतन तत्वों के अन्तर्गत जीवात्मा व प्रकषति की चर्चा की। अब प्रकषति को रूपान्तरित कर इस सष्टि को बनाने वाली सत्ता तथा सभी प्राणियों को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर जन्म देने वाले ईश्वर की चर्चा कर लेना भी समीचीन होगा। हम संसार को आंखों से देखते हैं व अपनी सभी इन्द्रियों से इसकी सत्ता का साक्षात् अनुभव करते हैं। यह सत्ता स्वप्नवत् न होकर यथार्थ व सत्य है। सष्टि में मुख्य रूप से सूर्य, चन्द्र व पष्थिवी को लेते हैं। यह तीनों नक्षत्र, ग्रह व उपग्रह स्वयं अपने आप नहीं बने हैं। कोई भी बुद्धि पूर्वक रचना अपने आप कभी नहीं हुआ करती। हमारे घर में आटा, जल, तवा, इंधन व सभी पदार्थ रखे हों तो क्या कभी इनसे रोटी बन सकती है? कभी

नहीं बन सकती। इसी प्रकार से सूक्ष्म प्रकषति से अपने आप सूर्य, चन्द्र आदि नाना प्रकार के उपयोगी व इच्छित पदार्थ स्वयं नहीं बन सकते। इनको बनाने वाला एक रचयिता अवश्य होना आवश्यक है। उस रचयिता को ही ईश्वर कहा जाता है। सषष्टि को बनाना ही उसका प्रथम मुख्य कार्य है। यह सषष्टि उसी के द्वारा बनाने से अस्तित्व में आई है। यदि वह न बनाता तो न बनती। उसने इसे अनायास बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया? रचना का अवश्य कोई न कोई उद्देश्य होता है। सषष्टि रचना का उद्देश्य भी अवश्य है। विचार करने पर, वेदों व वैदिक साहित्य से यह निश्चित होता है कि जीवात्मों के सुख भोग के लिये ईश्वर द्वारा यह बनाई गई है। बिना सषष्टि व इसके पदार्थों के जीवात्माओं को सुख व दुःखों की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः सषष्टि बनाने का प्रयोजन जीवात्माओं को उनके पूर्व सषष्टि के पाप पुण्यों का फल प्रदान करने अर्थात् सुख व दुःख प्रदान करने के लिये ईश्वर ने सषष्टि को बनाया है। माता–पिता–आचार्य का कार्य भी अपने पुत्र–पुत्रियों व शिष्यों को अच्छी शिक्षा देना व सुख प्रदान करना ही होता है। माता–पिता को यह शिक्षा ईश्वर की प्रेरणा व वैदिक ज्ञान से ही प्राप्त होती है। जब अल्पज्ञ माता–पिता यह कार्य करते हैं तो ईश्वर जो असंख्य माता–पिताओं व आचार्यों का भी माता–पिता–आचार्य व सर्वज्ञ है, वह सामर्थ्य होने पर भी सषष्टि की रचना, पालन व जीवों के सुख के लिये व्यवस्था क्यों न करेगा? अतः यह स्पष्ट हो गया कि ईश्वर नाम की एक सत्ता है जिसने जीवों के सुख के लिए सषष्टि की रचना की है।

यह ईश्वर कैसा है? युक्ति, तर्क, बुद्धि व वेद के प्रमाणों से यह सत्य, चेतन, आनन्द से पूर्ण, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, अभय, सषष्टिकर्त्ता आदि स्वरूप वाला सिद्ध होता है। सत्य का तात्पर्य उसकी सत्ता का होना है तथा चेतन का वर्णन हम पहले कर चुके हैं। चेतन तत्व होने के कारण उसे सुख व दुःख का ज्ञान होना स्वभाविक है। उसका आनन्द से युक्त होना आवश्यक है अन्यथा वह कोई कार्य नहीं कर सकता। तर्क व विवेचन से यह ज्ञात होता है कि दुःख एकदेशी, अल्पज्ञ व परतन्त्र सत्ता को होता है। ईश्वर सर्वव्यापक है, सर्वत्र है व स्वतन्त्र है अतः उसे दुःख होने का प्रश्न ही नहीं है। दुःख का एक अन्य कारण व साधन शरीर होता है। ईश्वर मानव के समान शरीर वाला है ही नहीं, अतः उसे कोई दुःख नहीं होता। अन्य सर्वव्यापक, निराकार आदि सभी विशेषण भी ईश्वर में घटते हैं व तर्क से सत्य सिद्ध होते हैं। यही ईश्वर का सत्य स्वरूप है। अतः ईश्वर की सत्ता भी सत्य सिद्ध है। इस प्रकार से ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति की पष्थक–पष्थक सत्तायें सिद्ध होती है। ईश्वरीय ज्ञान वेदों में भी इसके प्रमाण पाये जाते हैं। ऋग्वेद के मन्त्र 1/164/20 में इन तीन स्वतन्त्र सत्ताओं का वर्णन है। मन्त्र है 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वष्क्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्तयनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति।।' इस ऋग्वेद मन्त्र में स्पष्टरूप से वष्क्ष के रूप में प्रकषति का, पाप–पुण्यरूप फलों का भोग करनेवाले के रूप में जीव का और केवल साक्षीरूप में ईश्वर का कथन करके, ईश्वर, जीव तथा प्रकषति के नित्यत्व का प्रतिपादन किया है। यही मन्त्र मुण्डकोपनिषद् (3–1–1) तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् (4–6) में भी उद्धष्त कर इन उपनिषदकारों ने वेदानुकूल इन तीनों तत्वों के अनादित्व का उल्लेख किया है। इससे त्रैतवाद का प्रतिपादन वेदानुकूल होने से सत्य व यथार्थ है। जीवात्मा व जीव सत्य, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, एकदेशी, अल्पज्ञ, समीम व चेतन तत्व है। इन गुणों व कर्म–फलों के कारण ही ईश्वर के द्वारा इसका जन्म–मरण होता रहता है। जन्म–मरण की यह यात्रा मोक्ष पर पहुंच कर समाप्त होती है। मोक्ष के लिये धर्म, अर्थ व काम का अवलम्बन लेना होता है। वेद विहित कर्मों का नाम धर्म व वेद–निषिद्ध कर्मों का नाम अधर्म है। अधर्म से जीव कर्म–फल–बन्धन में फंसता है और धर्म से यह बन्धन ढीला व समाप्त होता है। जीवात्मा व मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था में पराधीन होता है। जन्म व मरण मनुष्य के अपने वश में नहीं है। माता–पिता भी यह अपनी इच्छा से नहीं चुन सकता। यह इसे इसके कर्मानुसार ईश्वर प्रदान करता है। हमने जड़ प्रकषति की चर्चा की है। यह अपनी मूल कारणावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत, रज व तम गुणों वाली होती है। इन तीन गुणों का संघात प्रकषति कहलाती है। ईश्वर इस प्रकषति से महतत्व बुद्धि, उससे अहंकार, उस से पांच तन्मात्रा, सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन की रचना करता है। पांच तन्मात्राओं से पषथिव्यादि पांच भूत, ये कुल चौबीस विकार व रचनायें और पच्चीसवां पुरूष अर्थात् जीव और छब्बीसवां परमेश्वर है। इनमें से प्रकषति अविकारिणी और महत्तत्व, अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकषति का कार्य, और इन्द्रियां मन तथा स्थूल भूतों का कारण हैं। पुरूष न किसी की प्रकषति, उपादान कारण और न किसी का कार्य है। हम समझते हैं कि लेख के प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि मैं वा समस्त जीव ब्रह्म अर्थात् ईश्वर नहीं हैं अपितु ईश्वर से भिन्न व पष्थक स्वतन्त्र एकदेशी चेतन सत्तायें हैं। वेदाध्ययन कर वेदाचरण से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति हमारा उद्देश्य व लक्ष्य हैं। हम निवेदन करते हैं कि वेदों व सद्ज्ञान की प्राप्ति के लिए सत्यार्थप्रकाश एक महत्ववपूर्ण धर्मग्रन्थ हैं। यह वेदों में प्रवेश की कुंजी है। सभी को इसका अध्ययन करना चाहिये। महान विद्वान पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने 130 पूर्व कहा था कि यदि सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य एक हजार रूपये भी होता तो भी मैं अपनी समस्त सम्पत्ति बेचकर इस ग्रन्थ को खरीदता और इसे पढ़ता। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। इत्योम्।

–मनमोहन कुमार आर्य देहरादून–248001 फोनः09412985121

हम तुम भांड हैं

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर, ग्वालियर

समझदार तो इस शीर्षक पर नाराज हो जावेगा, उत्तेजित होकर सरोष स्वर में कहेगा आपको क्या अधिकार है कि अपने आपको भांड, गवैया-नचैया, बहुरुपिया या नौटंकीवाज कहें पर दूसरों को भांड कहने का आपको कोई अधिकार नहीं है। यदि मै कहूं कि उस शब्द का प्रयोग महर्षि ने किया हैं तो आप अवाक रह जावेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम सम्मुलास में ईश्वर के गुण-कर्म स्वभाव का वर्णन कर उसनी सगुण और निर्गुण मत्ति, का उल्लेख किया है। ऐसी मन्ति, का फल यह बतायां है कि "जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण-कर्म-स्वभाव अपना भी करना और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है। व्यर्थ शव्द का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महर्षि ने "चरित्र" का आदर्श "परमात्मा" को ही रखा है। इससे अधिक सबल, सार्थक, निर्दोप, निर्विवाह और कोई आदर्श हो ही नहीं सकता। जो ईश्वर स्तुति चरित्र सुधार के लिये नहीं की जाती उसका करना व्यर्थ है।

पाजू-पाठ के प्रचलित कारोबार को लगभग ४० वर्पतक, २४ घन्टे देख-सुनकर उनके बीच रह कर, अत्यन्त सूक्ष्मता से अवलोकन करने के पश्चात् महार्षि का यह मन्तव्य, निष्कर्प आज भी उतना ही सटीक है जितना उनके काल में था। मेरी तो अत्यन्त अल्प वुद्धि मे सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश रचना का यह आधार वाक्य है।

सत्यार्थ प्रकाश मे अपने मन्तव्य को स्थायित्व प्रदान कर आर्य समाजियों को भी चेतावनी दे दी। लगभग १५० वर्प आर्य समाज भी स्थापना व सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशित हुए, हो चुके हैं। महर्षि के मन्तव्य को कितने आर्यसमाजियों ने समझा व अपनाया है, उसका सिंहावलोकन होना चाहिए अन्यथा आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के रसातल की तरफ तीव्र गति से अगसर हो रहे कदमों का थामा नहीं जा सकता। मेरा मानना है कि महर्पि के मन्तव्य को जिस पीढ़ी ने समझा व अंगीकार किया,वह पीढ़ी ही समान हो चुकी है। ग्वालियर के जिस आर्यसमाज ले मैं सम्वद्ध रहा वह स्थापना के १२५ वर्ष पश्चात् निम्नतम स्तर पर भग्न भवन को लेकर खड़ा है। पतन क्रमागत हुआ मोरे प्रारम्भ होने के पश्चात् उस पतन की गति में तेजी आई। इस बिन्दु पर अभी इतना ही लिखना पर्याप्त है।

प्रंसग पर आता हूं। आज भी प्रत्येक आर्यसमाजी ताल ठोक कर कहेगा कि हम वैदिक धर्मी ही ईश्वर विश्वासी हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में हमारा सोच ही सही है और पूजा-पद्धति भी सही है। ठीक है यदि दोनो बातें सही हैं तो हमारी संख्या वृद्धि होनी चाहिए पर तिर्थात यह है कि वृद्धि कम और हास ज्यादा हो रहा है। इसलिये न तो व्यक्तिगत रुप में हमें लाभ हो रहा है और नही सामाजिक रुप में हमारी वैदिक विचारधारा को स्वीकृति मिल रही है। हम १५० वर्षों में महर्पि के महत्वपूर्ण आशय को जन सामान्य अथवा प्रवुद्ध वर्ग को ही अंगीकार कराने में सफल नही हो सके। परिणाम स्वरुप पनदे वैष्णो देवी मन्दिर, बर्फानी बावा, सत्यसाई बाबा पुट्टपर्ती, साई बाबा शिरडी गायत्री मन्दिर, आसाराम बावा, रामपाल बावा, बावा राम रहीम, निर्मल बाबा आदि। आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों धाम तो थे, ही उनमें दरगाहें, विशेपकर अजमेर शरीफ भी जुड़ गई है। हिन्दू मित्रों की इनमें अपार श्रद्धा है, आस्था है। अपार श्रद्धा और अटूट आस्था को तोड़ने में मेरा विश्वास नही है, ईमान भी नही है। हम वैदिक धर्मी अपने चरित्र और आचरण से तथा वैदिक विद्वान प्रवचन और लेखन से बहुत कुछ कर सकते हैं।

यह विषयान्तरण नही हुआ है बल्कि मुख्य विषय पर आने से पूर्व अपना मूल्यांकन कर आगे बढ़ना उचित प्रतीत हुआ।

१५ नवम्बर २०१४ को प्लेसनटन, यू.एस.ए. आने से पूर्व विदेश मंत्री, जीवात्मा पुर्नजन्म व कर्मफल सिद्धान्त आदि मे उलझी हुई थी। दो लेखों में अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त करने के पश्चात् भी विश्राम नहीं मिल रहा था। यहां आने पर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुप्रसिद्ध ग्रंथ "जीवात्मा" का अध्ययन किया। उसी क्रम मे सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम और अष्टम सम्मुलास का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। दूसरे पारायण में, गाड़ी सम्मुलासों के क्रम पर अटक गई। यदि महर्षि का उद्देश्य केवल वैदिक धर्म की ही स्थापना होता तो प्रथम सम्मुलास के बाद ही सप्तम और अष्टम सम्मुलाओं के विषयों को ही स्थान मिलना चाहिए था। शिक्षा, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, सन्यास आदि विषयों में छः समुलास लिखने की बात तो बाद में भी रखी जा सकती थी। दो-तीन दिन बुद्धि का इसी बिन्दु पर अटके रहने दिया। सत्यार्थ प्रकाश की रचना का महर्पि का आशय समझ में आया, आत्मसात हुआ कि उनका उद्देश्य किसी प्राचीन, अर्वाचीन या नए मत को प्रस्थापित करने था नहीं था। उन्हें तो प्राचीनतम, सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना और व्यक्ति निर्माण, राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करना था। उसका ही धरातल तैयार करने में छः अध्याय लिखने पड़े। व्यक्ति, का सही निर्माण हो गया तो उसे ईश्वर और उसकी सृष्टि को समझने की योग्यता भी प्राप्त हो जवेगी।

इस लेख में तो मैं विषय के अनुरुप ही आगे बढ़ने का प्रयास करुंगा। देखिए, महर्षि सत्यार्थ प्रकाश में क्या लिखते हैं :-

जो सब दिव्य - गुण - कर्म - स्वभाव और विद्यायुक्त है जिसमें पृथिवी, सूर्यादि लोक स्थित हैं जो आकाश के समान सर्व व्यापक है जो सव देवों का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न जानते, न मानते और न उसका ध्यान करते हैं वे नास्तिक हैं और दुःखी होते हैं।

ईश्वर की परिभाषा और उसको न समझने का फल क्या इससे भी कम शब्दों में, पूर्ण स्पष्टता के साथ समझाया जा सकता है ?

आर्यसमाज के लिये निर्धारित दस नियमों के दूसरे नियम में महर्पि ने ईश्वर को २१ गुण-कर्मों का व्याख्यान किया है। पूर्वान्त, वर्णन में (१) दिव्य-गुण-कर्म-स्वभाव, (२) विद्यायुक्त, (३) हिरण्यगर्भ व (४) सर्वव्यापक तत्व बताए हैं। नियमावली में पहले दो विन्दु पृथक रुप से रेखांकित नही है। दूसरे नियम

का समापन इस वाक्यावली से किया है कि "वह सृष्टिकर्ता है और उसकी उपासना करना योग्य है । इस प्रसंग का समापन सप्तम सम्मुलास में महर्षि उसे 'नास्तिक' कह कर करते है और वह 'दुःखी' रहता है।

सामान्य जन ईश्वर में विश्वास न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं । विद्वान वेद में आस्था न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं । आप पूछेंगे कि दोनो में अन्तर क्या है ? दोनो में अन्तर यही है कि वेदज्ञ विद्वान वेद में चिन्हित किए गएं 'ईश्वर' को, जिसकी व्याख्या में अनेक मंत्र उपलब्ध हैं, उसे ही ईश्वर मानते हैं और सामान्य जन के लिये तो प्रत्येक वस्तु ईश्वर का स्वरुप ले लेती है जो उसके सर, सपाट दिलो, दिमाग में यह विश्वास दिला कर उतार दी जावे कि वह वजु या व्यक्ति उसके सब दुःखों, कष्टों और पापों का निवारण कर देने का सामर्थ्य रखता है । चाहे वह केदारनाथ, बद्रीनाथ, काशी, देवधर व उज्जैन के मन्दिरों में योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग ही क्यों न हो ? ईश्वर का यह स्वरुप, पढने, लिखने व बोलने में कितना कुत्सित लगता है ? यही नही समस्त चौबीस अवतार जिनमें सांप, सूअर शामिल हैं, 'ईश्वर' हैं ।

महर्षि दयानन्द ने अनेक वेद मंत्रों, उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रथों, उपनिषदों के निचोड़ के कप में सीधे सरल शब्दों में 'ईश्वर' को परिभाषित कर दिया है । इस परिभाषा के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं हो सकता । मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, महात्मा बुद्ध, बाईबिल तथा कुरान में वर्णित कोई भी ईश्वर नहीं । अन्य ईश्वरों को माननेवालों की भर्त्सना "नास्तिक" कह कर भी है । जब ईश्वरों को मानने वालों का ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान अधूरा और भटकाने वाला है तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले सुखी हो ही नहीं सकते । दुःखी ही रहेंगे ।

महर्षि यही नहीं रुके । परिभापा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि सगुण और निर्गुण भक्ति क्या है ? और उसका फल क्या है ? महर्षि लिखते हैं, जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे अपने भी गुण स्वभाव करना । जो केवल भांड के समान गुण कीर्तन करता जाता है और अपना 'चरित्र' नहीं सुधारता उसका ईश्वर की स्तुति करना व्यर्थ है । जो और व्यर्थ शब्दों का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है । जरा उनके प्रभाव को अनुभव तो कीजिए।

राजाओं और नवाबों के दरबारों में योग्य मंत्री चाहे हो न हो, परन्तु भांड अवश्य रहते थे । राजाओं का मन बहलाना, मनोरंजन करना उनका काम होता था । सीमाहीन चाटुकारिता उसका अपरिहार्य अंग होता था। एक बार एक राजा के भोजन में बैंगन की सब्जी परोसी गई । राजा को सब्जी बहुत स्वादिष्ट लगी और उसने सब्जी की बहुत प्रशंसा की ।

भांड महोदय ने तत्काल कहा, महाराज, एक यही सब्जी है जिसके सिर पर छत्र है । राजा ने कहा-वाह-वाह, क्या खूब कहा। कुछ समय पश्चात् बैंगन की सब्जी फिर राजा के भोजन में आगई । इस बार उसने राजा के पेट में विकार पैदा कर दिया । राजा बहुत नाराज होकर कहा - यह सब्जी बहुत खराब है । भांड महोदय को धक्का लगा और कहा कि यह तो बेंगुण है इसमें तो कोई गुण ही नहीं होता । महाराज, इसीलिये उस सब्जी को बेगुन (बिना गुण वाला) कहते हैं । अतः यह कोई खाने की चीज़ ही नहीं है ।

महर्षि, ईश्वर स्तुति "चरित्र" निर्माण के लिये निर्धारित करते हैं । जिस व्यक्ति ने अपनी समस्त शक्ति, ध्यान यहां तक भी ईश्वरोपासना ही चरित्र निर्माण के लिये लगा दी तो वह बुराइयों की ओर आकर्षित ही नही होगा । उसके कल्याण का मार्ग स्वयं प्रशस्त होता जावेगा ।

अन्य सभी मत (धर्म) वाले ईश्वर स्तुति का फल-या लाभ यह बताते हैं कि ईश्वर स्तुति से मनोकामना की पूर्ति, पापों से बिना फल भोगे छुटकारा और स्वर्ग की प्राप्ति होती है । दोनों के मन्तव्यों में जमीन - आसमान का अन्तर है । महर्षि का मार्ग कठिन है, बहुत कठिन है । अन्य मत वालों का बहुत सरल। अन्य मतवाले कहते हैं कि केवल ईश्वर का नाम जपने से ही, तीनो फल मिल जाते हैं । बस आदमी को चाहिए ही क्या ?

आज भी हजारों साधु - सन्यासी मिल जावेंगे जो नाम "जप" का महत्व प्रतिपादित कर, विश्वास दिला देंगे कि इतने ही कार्य से ईश्वर-पूजन की प्रक्रिया समाप्त होगी । नाम का जाप सीधा करो या उल्टा । स्वर्ग (कौनसा स्वर्ग?) का द्वार खुला मिलेगा । राम नाम की जगह 'मरा'-'मरा' भी बोलोगे तब भी । क्योंकि परमात्मा अर्न्तयामी है, भक्त की भावना को समझता है । इसीलिये ये लोग "मानना" के महत्व की बात करते हैं ।

सोमनाथ मन्दिर के परिसर में हम पति-पत्नि घूम रहे थे । कुछेक पुजारियों ने कहा कि वह हमारे लिये किसी भी देवता (ईश्वर) का पाठ करा देगा । बस आपको अमुक-अमुक देवता की अमुक-अमुक राशि दक्षिणा देनी होगी । हमने स्वयं भी देखा ऐसी पूजा चल भी रही थी । पूछा, पूजा का लाभ किसे मिलेगा । उत्तर मिला "भक्त" को यानि हमें। पूजा करेंगे पुजारी जी और लाभ 'भक्त' को। हे भगवन् कैसा "माया" जाल है ।

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने का निर्देश देते हुए महर्षि ने सांकेतिक रुप से एक गुण का उल्लेख किया है कि वह न्यायकर्ता है । यह क्षेत्र ऐसा है जिसे विना कुछ त्याग-तपस्या किए प्रत्येक मनुष्य अपना सकता है। यह गुण, सामाजिक गुणों का विकास करने का बहुत बड़ा आधार बन सकता है ।

ईश्वर जाति-भेद, रंग-भेद, ऊंच-नीच, सम्पन्नता-विपन्नता, किसी भी धारण से त्याग करने में भेद-भाव नहीं करता । सृष्टि की रचना कर, उसका निर्मूल्य, अपनी बुद्धि और सामर्थ्यानुकूल उपयोग करने की व्यवस्था परमात्मा ने कर रखी है । हम पूरी तरह से सृष्टि रचना का सत्यानाश करने पर तुले हुए हैं । **आज हम पानी बेच रहे हैं । कल हवा बेचेंगे । पर्यावरण प्रदूषण इतना बढ़ गया है और दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है कि एक दिन आक्सीजन का सिलेंडर लेकर निकलना पड़ेगा । लाखों, कैमिकल्स और मानव द्वारा निस्रुत गंदगी से नदियां भरी पड़ी हैं ।** इन नदियों के जल का आचमन, स्नान-ध्यान, वेद में वर्णित मोक्ष तो नहीं देगा, उदर और त्वचा सम्बंधी रोग जमकर देगा ।

ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के संसाधनों का बुद्धिपूर्वक उपयोग भी, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनामे वाले महर्षि के मंतव्य की पूर्ति करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है ।

ईश्वर भ्रष्टाचार नहीं करता, पाप नहीं करता । स्वलाभ व औषधियों में मिलावट नहीं करता । ईश्वर कन्या भ्रूण हत्या नहीं करता । क्या आप इन दुर्गुणों से दूर बहुत दूर, जाकर ईश्वर के निकट, अति निकट आने का प्रयास भी नहीं करना चाहेंगे ? या इन दुष्कर्मों में लिप्त रह कर "भांड" के समान स्तुति और प्रार्थना ही करते रहेंगे ?

'वेद और सत्यार्थ प्रकाश'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेद सष्षिटकर्ता, सर्वज्ञ, सर्वषक्तिमान व सर्वव्यापक ईष्वर के द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। ईष्वर के सर्वज्ञ होने के कारण उसका दिया हुआ ज्ञान भी पूर्ण व सर्वांगीण होना चाहिये और वेदों का ज्ञान ऐसा ही है। वेद ज्ञान की भांति आज ऐसा अन्य कोई ग्रन्थ सारे संसार मे नहीं है। किसी मत या सम्प्रदाय के ग्रन्थ की तुलना वेदों से नहीं की जा सकती। मतों के ग्रन्थों को देखते हैं तो उनमें अनेक कथन सष्षिटक्रम, विज्ञान, ज्ञान व सत्य से विपरीत पाते हैं। जिस ग्रन्थ व ज्ञान में एक भी बात असत्य या अज्ञानपूर्ण हो उसे ईष्वरीय ज्ञान कदापि नहीं कह सकते। यदि कोई व्यक्ति या समुदाय किसी पुस्तक के ईष्वरीय ज्ञान होने का दावा करता है तो उसे अपनी पुस्तक की प्रत्येक बात या कथन की पुश्टि कि वह पूर्ण रूप से सत्य है, करनी होगी। ऐसा दावा किसी का नहीं है। केवल महर्शि ने ही यह दावा किया था जिसका विपक्षीगण समुचित उत्तर नहीं दे सके और अभी भी मौन हैं, अतः वेद ज्ञान सभी पक्षों द्वारा ईष्वरीय, सत्य, उपादेय, प्रासंगिक व सबके लिए अपरिहार्य बन गया है। यह सर्व–विदित है कि सूर्योदय से अन्धकार मिट जाता है, इसी प्रकार से ज्ञान का प्रकाष हो जाने पर अज्ञान मिट जाता है। अज्ञान मिट गया तो अन्धविष्वास व कुरीतियां भी समाप्त हो जानी चाहियें और इनके स्थान पर सत्य, अन्धविष्वास रहित, ज्ञान से परिपूर्ण सुरीतियों का प्रचलन होना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि ऐसा हो नहीं रहा है। इसका कारण यह है कि यदि कोई आंख बन्द कर पड़ा रहे या नेत्ररोग से ग्रसित हो तो उसे सूर्य के प्रकाष से लाभ नहीं पहुंचता। ऐसी ही कुछ स्थिति हमारे उन भाईयों की है जो वैदिक ज्ञान से लाभ प्राप्त नहीं कर रहे हैं व दुराग्रह पर स्थित हैं। महर्शि दयानन्द के पत्रों में एक पत्र में कहा गया है कि सत्य का स्वरूप ऐसा नहीं है कि जिसे कोई स्थाई रूप से ढक सके या दबा सके। जिस प्रकार बादलों के होने पर सूर्य ढक जाता है और वर्शा के होने पर बादल का अस्तित्व समाप्त होकर सूर्य अपनी पूर्ण आभा के साथ प्रकाषित हो जाता है, कुछ ऐसा ही सत्य ज्ञान के साथ भी होता है। कुछ काल तक निग्रह में रहने के पष्चात अज्ञान, अन्धकार के बादल छंट जाते हैं और सूर्य व ज्ञान का प्रकाष सर्वत्र पुनः फैल जाता है। ऐसा ही समय महाभारत काल के बाद आया था। महर्शि दयानन्द के आगमन पर अवैदिक व अज्ञान दूर होकर वेद के सत्य ज्ञान का सूर्य जगमगा उठा और आज अपनी पूरी आभा के साथ प्रकाषित हो रहा है। इस कारण महर्शि अपने पत्र में कहते हैं कि वह असत्य को किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं कर सकते। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनायें हैं जब उन्हें प्रलोभन दिये गये परन्तु वह उनमें नहीं फंसे और उनका डट कर खण्डन किया। सत्य को छोड़कर असत्य व नित्य को छोड़कर अनित्य को प्राप्त होना मनुश्यता से बहिः अर्थात् मनुश्य होकर मनुश्य न होना है।

हम भावनाओं में बहकर नहीं अपितु अपने स्वाध्याय के आधार पर अनुभव करते हैं कि संसार में जितने भी मत–सम्प्रदाय या तथाकथित धर्मों की पुस्तकें हैं, उनकी वेद से कोई समानता नहीं है। इनमें आकाष व पाताल का अन्तर हैं। सम्भवतः इसी कारण महर्शि दयानन्द सरस्वती, जो महाभारत युद्ध के पष्चात विगत 5 हजार वर्शों में धर्म, संस्कषति, योग, दर्षन व ऐसें सभी विशयों के सबसे बड़े विद्वान थे, ने कहा कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' वेदों में जो ज्ञान है वह मनुश्यों के जीवन निर्वाह के लिए अपने आप में पूर्ण ही नहीं है अपितु एक आदर्ष जीवन व्यतीत करते हुए आध्यात्मिक एवं भौतिक दष्शिट से चरम स्थिति जिसे अभ्युदय व मोक्ष के नाम से जानते हैं, प्राप्त की जा सकती है। वेदों का ज्ञान मनुश्यों को कैसे मिला यह सभी के जानने योग्य है। यहां यह भी कहना चाहते हैं कि जो व्यक्ति जानता व मानता है कि वेद ईष्वर से प्राप्त ज्ञान है उसे निरन्तर इस विशय में चिन्तन मनन करते हुए नए तथ्यों का पता करना चाहिये। इस ज्ञान की प्राप्ति व उपलब्धि का तरीका अन्य प्रकार से मनुश्यों को मिलने वाले ज्ञानों से सर्वथा भिन्न है। अन्य ज्ञान तो माता–पिता, आचार्य, अध्यापक, गुरू व पुस्तकों आदि से प्राप्त होते हैं परन्तु यह ईष्वरीय ज्ञान सष्शिट के आरम्भ में ईष्वर अमैथुनी सष्शिट में आदि–प्रथम चार ऋशियों को देता है। आदि चार ऋशि व अन्य मनुश्य बड़ी संख्या में उत्पन्न होते हैं। इन मनुश्यों के ज्ञान व बल प्राप्ति की क्षमतायें बाद में उत्पन्न होने वाले व आजकल के मनुश्यों से कहीं अधिक होती हैं। ज्ञान देने के लिए ईष्वर चार ऋशियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमषः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान देता है। यह ज्ञान ईष्वर ने इन ऋशियों की आत्मा में जीवस्थ स्वरूप से दिया। इसको इस प्रकार से समझ लें कि जब दो व्यक्ति आस–पास, बहुत समीप होते हैं तो एक व्यक्ति दूसरे को बोलकर बताता है। पूछता है कि समझ में आया या नहीं। नहीं आने पर समझाता है। अब कल्पना कीजिए कि बताने वाला व्यक्ति बताये जाने वाले व सुनने वाले व्यक्ति की आत्मा के अन्दर भी प्रविश्ट है तो वह क्या करेगा। क्या उसे बोलने की आवष्यकता होगी। नहीं होगी इसलिए कि उसका कान बाहर है वह बोलने वाला अन्दर। कान का काम बाहर उठने वाले षब्दों को सुनना, जानना व समझना होता है। ज्ञान देने वाला

यदि हमारे भीतर हो, तो बोलने व सुनने की आवष्यकता नहीं है। वह ज्ञान बिना बोले व बिना सुने आत्मा को प्राप्त हो जाता है। वेदों के ज्ञान के सन्दर्भ में सारी सष्टि का निर्माता जो सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तरयामी व सर्वज्ञ आदि अनन्त गुणों वाला है, वह ज्ञान दे रहा है। ज्ञान लेने वाला एक अल्पज्ञ, एकदेषी व चेतन जीवात्मा है जो मनुष्य षरीर में स्थित है। अतः ईष्वर को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं है। इसका प्रमाण "चार वेद" हैं। यदि वेद को ईष्वरीय ज्ञान नहीं मानते तो न मानने वालों को अपना पक्ष सिद्ध करना पड़ेगा और मानने वालों के सभी प्रष्नों के उत्तर देने होगें। यह उत्तर दिये जाने सम्भव नहीं है ऐसा विवेक व अनुभव से सिद्ध हुआ है। विगत 139 वर्शो से महर्शि दयानन्द व आर्य समाज समाज वेदों को ईष्वर प्रदत्त सिद्ध करने के पक्ष पर डटे हुए हैं। आज हमारी एतद् विशयक मान्यता का विरोध ी कोई है ही नहीं, यदि होता तो सामने आता और ठोस तर्क देता। इससे यह निश्कर्श निकलता है कि वेदों को ईष्वरीय ज्ञान मानने का पक्ष सत्य सिद्ध हो चुका है। एक अन्य उदाहरण और लेते हैं। हम अपने आप से भी यदा-कदा बातें करते हैं अर्थात् हमारी आत्मा जब कुछ विचार व चिन्तन करती है तब उसमें भाशा व षब्दों का व्यवहार होता है। परन्तु अपनी आत्मा में विचार व चिन्तन करते हुए हम बोलते नहीं है, इसकी आवष्यकता ही नहीं होती। इसी प्रकार ईष्वरात्मा-परमात्मा, ऋशियों की आत्मा में ज्ञान को बिना मुख-इन्द्रिय से बोले जीवस्थ स्वरूप से देते या प्रदान करते हैं।

वेदों की हमने चर्चा की। यह वेद मध्य काल में विलुप्त प्रायः हो चुके थे। कई बार कार्य अच्छे न होने पर भी उन कार्यों में से अच्छाईयां जन्म ले लेती हैं। सायण, महीधर आदि ने वेदों का भाश्य किया जो कि वेदों के सत्य व वास्तविक अर्थों का तो बोध नहीं कराता परन्तु इससे चारों वेदों की संहितायें अर्थात ईष्वर से प्राप्त मन्त्रों का संरक्षण हुआ। सायण के काल में न तो आज कल की तरह कागज बनता था और न हि मुद्रण की सुविधायें थीं। कागज के विकल्प के रूप में भोज पत्र, सम्भवतः हाथ से बना हुआ कागज या ऐसा ही कुछ अन्य होता था। मुद्रण के स्थान पर हस्त-लिखित प्रतियां ही हो सकती हैं। वह सायण व अन्यों के इतने वर्शों बाद तक सुरक्षित रहीं यह भी एक बहुत बड़ा चमत्कार प्रतीत होता है। महाभारत काल के बाद जहां अन्ध कार व अन्धविष्वासों का युग आया, वहीं एक कार्य तो ऐसा हुआ कि जिसके लिए कुछ अज्ञात लोग प्रषंसा के पात्र हैं और वह थे वह लोग जिन्होंने चारों वेदों की मन्त्र संहिताओं को स्मरण कर या लिखकर सुरक्षित रखा। संसार में ऐसा कार्य कहीं नहीं हुआ। वेद अन्य ग्रन्थों व साहित्य से सर्वथा भिन्न हैं। सष्टि के आरम्भ से ही वेदों को स्मरण करने की परम्परा थी जो आज भी जारी है। आज भी दक्षिण में ऐसे लोग हैं जिनके यहां परम्परा से वेदों को सस्वर कण्ठस्थ किया जाता है। यद्यपि इन लोगों को मन्त्रों के अर्थ ज्ञात नहीं होते परन्तु वेदों के प्रति श्रद्धा का यह एक ऐसा उदाहरण है जिसकी मिसाल सारी दुनियां में कहीं नहीं मिलती। मैक्समूलर जैसे पाष्चात्य विद्वानों ने भी इसकी प्रषंसा की है। वेदों की मन्त्र-संहिताओं कि जिनका आकार 20 हजार से अध िक मन्त्र हैं और जिनका उन्हें अर्थ-ज्ञान नहीं है, उन्हें कण्ठस्थ करना वस्तुतः इस पष्थिवी पर सबसे बड़ा चमत्कार है। हम वेदों की रक्षा करने के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने वाले उन सभी बन्धुओं को अपने हष्दय से प्रणाम कर उनका धन्यवाद करते हैं।

महाभारत के कुछ काल बाद हुए जैमिनी ऋशि पर आकर ऋशि परम्परा के अवरूद्ध हो जाने के कारण वेदों के सत्य अर्थो का लोप हो गया। यद्यपि इसके बाद भी वेदों के अनेक विद्वान हुए जिन्होंने सत्यासत्य मिश्रित वेदार्थ किए हैं। इनके असत्य अर्थो के लिए उनका दोश इसलिए कम है कि वह सत्य अर्थो को जानते ही नहीं थे। दोशी तो तब होते जब उन्होंने जानबूझकर मनमाने अर्थ किये होते। वास्तविक दोशी तो वे लोग हैं जिनके आलस्य प्रमाद के कारण वेदों की परम्परा में रूकावटें आईं। जो भी हो, जहां एक ओर अन्धकार था, वहीं दूसरी ओर कुछ वेदों के रक्षक भी ईष्वर की कष्पा से देष में रहे जिन्होंनें आर्श व्यापकरण के ग्रन्थ अश्टाध्यायी, महाभाश्य, निरूक्त व अन्य ग्रन्थों का प्रणयन किया। कालान्तर में कुछ वेदभक्तों द्वारा इन ग्रन्थों की षताब्दियों तक रक्षा हो सकी जिससे प्रज्ञाचक्षु गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती को यह व्याकरण आदि ग्रन्थ प्राप्त हो सके और उनसे इनका ज्ञान स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त हो सका। गुरू विरजानन्द सरस्वती व स्वामी दयानन्द सरस्वती को वेदों के सत्य अर्थो के पुनरूद्धार का श्रेय है। आज वेद अपने वास्तविक अर्थो के साथ उपलब्ध हैं। स्वामी दयानन्द के बाद उनके अनेक षिश्यों ने वेदों की रक्षा व उनके भाश्य अर्थात् सत्य अर्थों को जन-सामान्य को सुलभ कराने में घोर परिश्रम व तप किया। कुछ नाम पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, जयदेव षर्मा विद्यालंकार, हरिषरण सिद्धान्तालंकार, पं. तुलसीराम स्वामी, स्वामी ब्रह्ममुनि, पं. आर्यमुनि, पं. विष्वनाथ विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड, डा. रामनाथ वेदालंकार, स्वामी डा. सत्य प्रकाष, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, स्वामी जगदीष्वरानन्द सरस्वती आदि मुख्य हैं।

चार वेद मन्त्र संहितायें ईष्वरीय ज्ञान हैं जो आदि सष्टि में मनुश्यों को ईष्वर से प्राप्त हुआ। इन्हें नित्य कहा जाता हैं। नित्य वह ज्ञान होता है जो सदा-सर्वदा एक समान रहता है। ऐसा ज्ञान समय के साथ घटना व बढ़ता नहीं है। ईष्वर में यह ज्ञान अनादि काल से है और अनन्त काल अर्थात् भविश्य मे भी इसी प्रकार से इतना ही, न कम न अधिक, बना रहेगा। यह ज्ञान क्योंकि कभी उत्पन्न ही नहीं हुआ अर्थात् यह ईष्वर में हमेषा से है, इस कारण यह भविश्य में भी इसी प्रकार से पूर्ववत्, वर्तमानवत

सुरक्षित रहेगा। प्रत्येक युग व कल्प में इसका अस्तित्व होगा व यह ऐसे का ऐसा ही परिवर्तन बिना बना रहेगा। यह ज्ञान मनुश्यों को किस प्रकार से मिला, इसका संक्षिप्त उत्तर है कि ईष्वर ने सषश्टि व मनुश्येतर प्राणियों की रचना करने के बाद युवा मनुश्यों को बनाया। इन स्त्री व पुरूशों में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा व ब्रह्मा नाम के चार ऋशि भी उत्पन्न हुए। ईष्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी होने से मनुश्यों की जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान है। उसने इन प्रथम चार ऋशियों की आत्मा में प्रेरणा करके वैदिक भाशा व ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान स्थापित कर दिया। आज कम्प्यूटरों में भी पेनड्राइव, फलोपी या सीडी व ऐसे अन्य साधन बन गये हैं कि इन्हें कम्प्यूटर में लगाकर इन्सटाल की कमाण्ड या आदेष देते हैं और इनमें जो ज्ञान, भाशा, डेटा, आडियों व वीडियोज् आदि होते हैं वह सब कम्प्यूटर में अपलोड हो जाते हैं और कम्प्यूटर यथोचित प्रकार से काम करने के योग्य हो जाता है। कम्प्यूटर नेटवर्किंग से एक कम्प्यूटर के डेटा, आडियों, वीडियों, षाब्दिक ज्ञान आदि को वेबसाइट, इमेल व लिंक आदि के द्वारा आदान–प्रदान किया जाता है। ईष्वर के ज्ञान देने के बाद उन चारों ऋशियों को ईष्वर की प्रेरणा हुई कि वह उन्हें दिया गया वेदों का ज्ञान एक–एक कर ब्रह्मा जी को प्रदान करें। ब्रह्माजी को भी ऐसी ही प्रेरणा हुई थी। इस प्रकार से प्रथम चार ऋशियों ने उच्चारण व श्रवण के द्वारा ब्रह्माजी को चार वेदों का ज्ञान दिया। चिन्तन करने पर हमें लगता है कि जब अग्नि ऋशि ब्रह्माजी को ऋग्वेद का ज्ञान दे रहे थे तो वहां उपस्थित वायु, आदित्य व अंगिरा भी ऋग्वेद के मन्त्रों व उनके अर्थों आदि को अवष्य ही सुन रहे होगें। उन सब पांच ऋशियों को इस प्रकार से ऋग्वेद का ज्ञान एक समय में हो गया। इसके बाद वायु ने यजुर्वेद का ज्ञान ब्रह्माजी को दिया और इसके सम्पन्न होने पर पांचों ऋशियों को यजुर्वेद का ज्ञान भी हो गया। इसी प्रकार से सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान भी सभी पांचों ऋशियों को उत्तर काल में हुआ। यह कार्य समाप्त होने पर षेश मनुश्यों, स्त्री व पुरूशों को ज्ञान कराने का अवसर आया। इन पांच ऋशियों ने समूह में उन सबकों चारों वेदों का ज्ञान कराने का प्रयत्न किया। हमारा निजी अनुमान है कि अनेक मनुश्य अर्थात् स्त्री व पुरुश चारों वेदों के जानकार हो गये। कुछ अधिक प्रवीण व योग्य बने व कुछ कम। इस प्रकार से सषश्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा ज्ञान के प्रचार व अध्ययन–अध्यापन की परम्परा आरम्भ हुई।

ईष्वर ने अपने नित्य ज्ञान व सामर्थ्य से ब्रह्माण्ड की रचना की। यह ब्रह्माण्ड कैसा है कि जिसका आज के वैज्ञानिक भी इसे पूरा जान नहीं पाये। इतनी चर्चा हम अवष्य कर लें कि रात्रि में जो तारे दिखाई देते हैं, यह सब हमारे सूर्य की ही तरह के सूर्य हैं। हो सकता है कि कुछ सूर्य हमारे इस सूर्य से भी कहीं अधिक बड़े हों। वैज्ञानिक मानते हैं कि सषश्टि में कई बड़े–बड़े सूर्य इतनी अधिक दूरी पर हैं जिनका प्रकाष इस पषथिवी पर लाखों वर्श की यात्रा करके पहुंचता है। ऐसे भी तारों के होने की सम्भावना है, कि सषश्टि को बने 1,96,08,53,0113 वर्श पूर्ण होने पर भी, उनका प्रकाष अभी तक दूरी के कारण पषथिवी पर पहुंच नहीं सका है, आने वाले समय में वह पहुंचेगा। इससे हमारी पषथिवी व अनेक सूर्य लोकों की परस्पर दूरी का पता चलता है। इस व ऐसे कारणों से वेदों ने व हमारे प्राचीन ऋशियों ने ईष्वर को सर्वव्यापक, ब्रह्म, सषश्टिकर्ता आदि कहा है। वह सर्वव्यापक ईष्वर कैसा है? विचार करने पर पता चलता है कि उसका न कोई ओर है और न कोई छोर अर्थात् वह आदि व अन्त से रहित है। इस बात को समझना जरा कठिन है। निरन्तर स्वाध्याय करते रहने व चिन्तन–मनन एवं विचार करते रहने से यह बात स्वतः बुद्धि में बैठ जाती है। इसके साथ वह ईष्वर सर्वज्ञ व सर्वषक्तिमान भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है ज्ञान की पराकाश्ठा। ज्ञान की पराकाश्ठा कभी भी एकदेषी सत्ता में नहीं हो सकती, वह केवल सर्वव्यापक सत्ता में ही होती है। सर्वव्यापक सत्ता का मूर्तिमान होना असम्भव है, वह केवल निराकार ही हो सकती है। इसके साथ जिस सत्ता में इतने गुण हों, वह अत्यन्त सूक्ष्म ही हो सकती है और वस्तुतः है भी। ज्ञान केवल चेतन सत्ता को ही होता है अर्थात् उसमें विहित व निहित होता है। चेतन सत्ता का एक गुण उसका ज्ञाननिहित व ज्ञान प्राप्ति में समर्थ होना है तो उसका दूसरा स्वभाविक गुण क्रिया या कर्म से युक्त होना है। ईष्वर में ज्ञान है तो कर्म भी है और कर्म के होने से वह खाली, आलसी, निकम्मा या पुरुशार्थहीन कभी नहीं होता। इसी कारण वह सषश्टि को बनाता है, चलाता है, पुरानी व बेकार होने पर उसकी प्रलय करता है। फिर पुनः उस प्रलय की हुई सषश्टि से नई सषश्टि बनाता है। इस प्रकार से वह सतत् कर्मो को करते हुए व्यस्त रहता है। वेदों में उसने स्वयं के बारे में बताते हुए स्वयं को सहस्रषीर्शा, सहस्रबाहु व षतक्तो आदि कहा है। यह वस्तुतः सत्य है। यहां षत व सहस्र का अर्थ असंख्य या अनन्त है।

ईष्वर ने हमारी मातषभूमि व भूमि माता को बनाया तथा हमें जन्म दिया। भूमि में नाना प्रकार के उपयोगी पदार्थ बनाकर सारी दुनियां के मानवों को निःषुल्क प्रदान किये। हमारा षरीर ईष्वर की ही रचना है। यह उसी का चिन्तन है कि हमें उसने देखने, सुनने, बोलने, छूने व सूंघने के लिए इन्द्रियां प्रदान की व भोजन के लिए तरह–तरह के अत्यन्त स्वादिप्ट एवं पौश्टिक पदार्थ बनाकर दिये हैं। जिस ईष्वर ने इतना कुछ दिया है, क्या उसने सषश्टि के आरम्भ में हमें भाशा व ज्ञान नहीं दिया था? हमारा चिन्तन कहता है कि जिस ईष्वर ने हमारा सिर, आंखे, नाक, कान, गला, मुंह व त्वचा को बनाया है उसको यह ज्ञान भी था कि

...शेष पृ. १७ पर

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् रत्न धातमम्।। १,१,१।।

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ।

वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०६९, तदनुसार १५ अगस्त २०१५ शनिवार से २९ अगस्त २०१५ शनिवार तक बडे समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदे जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए।

१. श्रावणी-पर्व दिनांक २९ अगस्त २०१५ शनिवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो।
२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानो सहित ८-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४१) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो।
३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।
४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।
५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पडोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक -से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करे।

सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।

रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानो में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नही तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर मे यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करें। साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अडोस-पडोस के लोगो में वैदिक वातावरण का निर्माण हो।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्येति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनो संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढे ऋण-बन्धनों को तोडने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उतारना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहकबनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्ववानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करें।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री सभा — विठ्ठलराव आर्य, एम.एससी. एल.एल.बी., प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र, प्रदेश, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दि. २९अगस्त २०१५ शनिवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणें की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदूनुसार शनिवार दिनांक २९ अगस्त २०१५ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्य में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ। उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रबन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१. ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋकोवृधो घोरासो अनृतद्विषा तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमे नमः स्याम वे च सुरयः।।
ऋग्वेद ७,६६,१३

२. ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपध्नन्तो अराह्वणः।। ऋग्वेद १,६३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलहृतः स्याम।।
ऋग्वेद १,६३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें। जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृध्दि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मो के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें। आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्म बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रध्दांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीष झुकाते हैं।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर।।
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत धरते हैं।।
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी रामाजी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का।।

भवदीय

विट्ठलराव आर्य एम.एससी., एलएल.बी.,
प्रधान सभा

हरिकिशन वेदालंकार
मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

అసలు మహాత్ముడు

తొలినాళ్ల కాంగ్రెసు తమాషా

స్వాతంత్ర్యోద్యమంలాగే కాంగ్రెసు చరిత్రనూ గాంధి గారు రంగంలో దిగడానికి ముందు, ఆ తరాత అని రెండుగా విభజించి.. మహాత్ముడి రాకకు ముందు జరిగిందంతా ముఖ్య ఇతిహాసానికి పూర్వరంగం మాత్రమేనని భావించటం పరిపాటి. గాంధీజీ చేతిలో పడటానికి ముందు కాంగ్రెసు సంస్థ ఎలా ఉండేది, ఎలా పని చేసేది అన్న సంగతి స్వాతంత్ర్య యోధుల్లోనే చాలా మందికి సరిగా తెలియదు. పుట్టుక లగాయతు కాంగ్రెసు నడతను దగ్గర నుంచి చూసి, తాము గమనించింది గ్రంథస్థం చేసిన వారు తక్కువ. అందులోనూ మొగమాటం, దాపరికం లేకుండా చేదు నిజాలను కుండబద్దలు కొట్టినట్టు బయటపెట్టిన వారిని ఒక చేతి వేళ్ల మీద లెక్క పెట్టవచ్చు.

> లాహోరు కాంగ్రెసు సెక్రటరీ నన్ను చూసి గబగబ వచ్చాడు. 'ఎలాగూ పది రూపాయలు కట్టావు కదా? అందుకని డెలిగేటు గానూ పేరు రాయించుకో' అని సలహా ఇచ్చాడు. 'అది మోసం; అలా చెయ్యను' అని నేను తిరస్కరించాను. కాని - చిత్రం! నేను రీ దరఖాస్తు పెట్టకుండానే, ఏ కాగితం మీదా సంతకం చేయకుండానే నన్ను డెలిగేటుగా గుర్తిస్తూ ధ్రువీకరణ పత్రం జారీ అయింది.

అలాంటి బహు కొద్ది మందిలో మొట్టమొదట ఎన్నదగినవాడు స్వామి శ్రద్ధానంద.

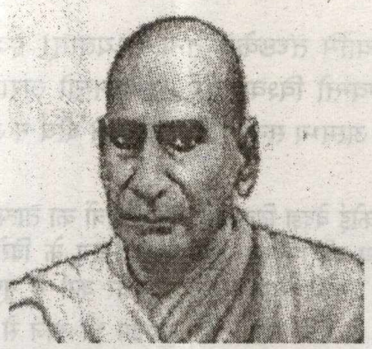

ఆయన గాంధికంటే పదమూడేళ్ళు పెద్దవాడు. మోహన్‌దాస్ దక్షిణాఫ్రికాలో ప్లీడరు ప్రాక్టీసు చేసుకుంటున్న కాలంలోనే మున్షీరాం (అనంతర కాలంలో ఆయనే స్వామి శ్రద్ధానంద) కాంగ్రెసు కార్యక్రమాల్లో చురుకుగా పాలుపంచుకున్నాడు. గాంధిగారి ప్రత్యేకం అని అందరూ తలపోసే విశిష్ట విధానాలను గాంధికంటే చాలా ముందే ఆయన తలకెత్తుకున్నాడు. ఎవరికివ్వాల్సిన గౌరవం వారికి ఇస్తూనే ఎవరికీ దాసోహం అనకుండా యధార్థవాదిగా నిలబడ్డాడు. కల్లనూ కపటాన్నీ నిర్భయంగా ఎండగడుతూ కాంగ్రెసులో ఏమి జరుగుతున్నదన్న దాని మీద ఆ కాలంలోనే ***'Inside Congress'*** అని గొప్ప పుస్తకం రాశాడు. గాంధి, నెహ్రూలను మాత్రమే కాంగ్రెసు ఇలవేల్పులుగా ఆకాశానికెత్తే సోకాల్డ్ చరిత్ర గ్రంథాల్లో రాసిన దానికి అది పూర్తిగా విరుద్ధం. అందుకేనేమో ఘరానా చరిత్ర గ్రంథాల్లో దాని ఊసు ఎక్కడా ఉండదు. అలాంటి పుస్తకం ఒకటి ఉన్నట్టే చాలామందికి తెలియదు.

మున్షీరాం చూసిన తొలినాళ్ల కాంగ్రెసు ఎలా ఉండేది? ఆయన మాటల్లోనే ఆలకించండి:

జాతీయ స్థాయిలో రాజకీయ సంఘమేదో పెట్టబోతున్నారని 1885 సెప్టెంబరులో కాబోలు విన్నాను. ఎ.ఒ.హ్యూమ్ చొరవతో కొద్దిమంది మేధావులు ఉమేశ్‌చంద్ర బెనర్జీ అధ్యక్షతన ఒకచోట కూడి 'ఇండియన్ నేషనల్ కాంగ్రెసు'ను స్థాపించారు. అప్పట్లో నేను లా చివరి సంవత్సరం కోర్సు చేస్తున్నాను.

కొంతకాలం గడిచాక జలంధర్‌లో కొందరు న్యాయవాదులు కూడి స్థానిక కాంగ్రెసు కమిటీని ఏర్పరిచారు. నన్ను సెక్రటరీని చేశారు. నేను రాత్రంతా చాలా కష్టపడి గ్రామాల్లో పట్నాల్లో కాంగ్రెసు ఆశయాలను ముందుకు తీసుకెళ్లడానికి ఏమి చేయాలన్న దానిపై పెద్ద ప్రణాళిక వేసి మర్నాడు ఉదయమే ఎగ్జిక్యూటివ్ కమిటీ ముందు ఉంచాను. మా వాళ్లు పగలబడి నవ్వారు. 'మహాశయా! ఇది మీ ఆర్య సమాజం కాదు. జనంలోకి వెళ్లటం, వారిని చైతన్యపరచటం లాంటివి ఇక్కడ పనికిరావు. కాంగ్రెసును పెట్టింది రాజకీయ ప్రాపగాండా కోసం. అంతే' అన్నారు. నాకు చిర్రెత్తి కార్యదర్శి పదవికి అక్కడికక్కడే రాజీనామా చేశాను.

1893లో కాంగ్రెసు వార్షిక సభలను లాహోర్‌లో పెట్టాలనుకున్నారు. నా మిత్రుడు ఆహ్వాన సంఘానికి కార్యదర్శి. కాంగ్రెసు అంటే అప్పట్లో చదువుకున్న వారికే పెద్దగా తెలియదు. దాని పేరు చెబితే - అది మనిషా, జంతువా, ఏదైనా వింత వస్తువా అని అడుగుతారు. అందుకని కాస్త కాంగ్రేసు గురించి నలుగురికీ నువ్వు తెలియజెప్పాలి - అని నన్ను అడిగాడు. పంజాబ్‌లో పది పన్నెండు పెద్ద పట్నాల్లో కాంగ్రెసు గురించి నన్ను లెక్చర్లు ఇమ్మన్నారు. నేను సరే అన్నాను.

ఉపన్యాసాల వరసలో మొదటిది అమృత్‌సర్‌లో. 1500 మంది పట్టే పెద్ద హాలును అక్కడ బుక్ చేశారు. ఊరంతా పెద్ద పోస్టర్లు అంటించారు. వేల కరపత్రాలు పంచి పెట్టారు. అంత పెద్ద సభలో నేను మాట్లాడగలనో లేనో అని భయపడుతూ, నేను వెళ్లి చూద్దును గదా..! హాల్‌లో పట్టుమని పదిమంది కూడా లేరు. 'కాసేపు ఆగుదాం. అందరూ వచ్చేస్తున్నారు' అన్నాడు కార్యదర్శి. కాని ఎంతసేపు ఆగినా మొత్తం సభికుల సంఖ్య వేదిక మీద ఉన్నవారితో కలిపినా 60 దాటలేదు. అందులో నా వెంబడి, నా కోసం వచ్చిన ఆర్య సమాజం వాళ్లే 30 మంది ఉన్నారు.

మూడు రోజుల తరవాత 'ట్రిబ్యూన్' దినపత్రికలో ఆ సభ విశేషాలతో పెద్ద వార్త వచ్చింది. దాన్ని చదివితే నా మతి పోయింది. ఆ రోజు మా సభకు హాలంతా కిటకిటలాడిందట. కుర్చీలు దొరకక చాలామంది నిలబడ్డారట. నా అద్భుత వాగ్ధాటికి సభానదులందరూ ముగ్ధులయ్యారట. పదేపదే చప్పట్లతో సభ దద్దరిల్లిందట.

చదివిన వాడిని 'జాను కాబోలు' అనుకుని గమ్మునుండక 'ఎందుకలా రాశారు. నిజంగా జరిగింది ఇది-' అంటూ ఆ పత్రిక సంపాదకుడికి వివరంగా ఉత్తరం రాశాను. నేను చెప్పిన దాన్ని దయచేసి ప్రచురించమన్నాను. నా వివరణ పత్రికలో అయితే రాలేదు. తరవాత జరగాల్సి వున్న పది సభలకూ నన్ను అక్కర్లేదు పొమ్మన్నారు. నేను మరీ మంచిదనుకున్నాను.

ఆ రోజుల్లో సర్ సయ్యద్ అహమ్మద్ కాంగ్రెసుకు పెద్ద సవాలుగా ఉండేవాడు. ఆయన పోటీ 'లీగ్'ను పెట్టి కాంగ్రెసులోని ముస్లింలను అందులోకి లాగేస్తుండేవాడు. అతడి దెబ్బను కాచుకోవటానికి నేను పనికిరానని గ్రహించాక కాంగ్రెసు పెద్దలు ఒక ముస్లిం ప్లీడరును పట్టుకున్నారు. లాహోర్

కాంగ్రెసుకు ముస్లిం డెలిగేట్లను సమీకరించడానికి అతడి తంటాలు అతడు పడ్డాడు.

జాతీయ కాంగ్రెసు వార్షిక సభలకు పత్రికల్లో ప్రచారం దేశమంతటా అదిరిపోయింది. ప్రతి రాష్ట్రం నుంచి ప్రతి జిల్లా నుంచి క్రమపద్ధతిన ఎన్నికైన డెలిగేట్లు అక్కడ చేరి ముఖ్యమైన జాతీయ సమస్యలను సమగ్రంగా చర్చించేవారు అని పత్రికలు చదివిన వాళ్లు అనుకునేవారు. అసలు సంగతి వేరు. లాహోర్ కాంగ్రెసు సందర్భంలో దాన్ని నేను దగ్గర నుంచి గమనించాను.

డెలిగేట్ల ఎన్నిక గొప్ప తతంగం! స్థానిక కాంగ్రెసు సెక్రటరీ సర్వసభ్య సమావేశాన్ని పిలిచాడు. అతికష్టం మీద ఓ ఇరవై మంది దానికి హాజరయ్యారు. ఎవరికి తోచిన పేర్లు వారు జోడించి, ఓ 41 మంది పెద్ద మనుషుల జాబితా తయారుచేశారు. సమావేశంలో వారిని కాంగ్రెసు మహాసభకు డెలిగేట్లుగా ఎన్నుకున్నట్టు పత్రికా ప్రకటన జారీ అయింది.

అలా ఎన్నుకోబడిన 41 మందిలో నేనూ ఒక డెలిగేటును. తీరా బయలుదేరే సమయానికి 41 మందిలో బహుకొద్ది మంది మినహా ఎవరూ జాడలేరు. లాహోర్ రైలు చిక్కడానికి ఎవరెవరో జలంధర్ రైల్వేస్టేషనుకు వచ్చారు. మా సెక్రటరీ వారి వెంటపడ్డాడు. 'ఎలాగూ లాహోర్ వెళుతున్నాం కదా. కాంగ్రెసు మహాసభలకు కూడా హాజరవకూడదా? మీరు సరే అంటే మిమ్మల్ని డెలిగేట్లుగా ప్రకటిస్తాం' అని బతిమిలాడాడు. ఒప్పుకున్న వాళ్లు అదనంగా జాబితాకెక్కారు. ఇలా మహాసభలు మొదలయ్యేంతవరకూ లిస్టులో కొత్త పేర్లు వీలైనకాడికి ఎక్కుతూనే ఉన్నాయి.

నేను మహాసభ ఆరంభానికి రెండు రోజుల ముందే లాహోర్ చేరాను. మర్నాడు సాయంత్రం స్నేహితులతో కలిసి సభాస్థలానికి వెళ్లాను. ఆహ్వాన సంఘానికి కార్యదర్శి అయిన నా మిత్రుడు దిగులుగా ఉన్నాడు. ఎందుకని అడిగతే డెలిగేట్ల నమోదు చాలా మందకొడిగా సాగుతున్నది. చివరికి ఎంత మంది [illegible]డుతారో అర్థం కావటం లేదు- అన్నాడు.

ఆ సమస్యకూ ఒక ఉపాయం కనిపెట్టారు. నగరంలోని ముస్లిం మతబోధకుల్లో ఎంతమంది దొరికితే అంత మందినీ కాంగ్రెసు డెలిగేట్లు అని పేరు పెట్టి పట్టుకొచ్చారు. రూల్సు ప్రకారం ప్రతి డెలిగేటూ పది రూపాయల రుసుము, భోజన ఖర్చుల కింద మరో పది రూపాయలు చెల్లించాలి. అవేవీ అడక్కుండానే వాళ్లను డెలిగేట్లుగా పంపించమని నిర్వాహకులు నాకు చెప్పారు. డెలిగేట్లు నమోదు వ్యవహారాన్ని నేను చూస్తున్నాను. సెక్రటరీ వచ్చి చెబితే తప్ప అలా కుదరదని నేను ఖండితంగా చెప్పాను. 'అలాంటివేం అడక్కు. ముందు పని కానివ్వమ'ని సెక్రటరీ వచ్చి చెప్పాడు. దమ్మిడీ రుసుము కట్టకుండా, మహాసభల్లోనూ ఏమంత పాల్గొనకుండా, ఆ వచ్చిన వాళ్లు ఎక్కువ సమయం భోజనశాలలోనే గడిపారు. ఈ పోకడలన్నీ చూశాక నాకు కాంగ్రెసు అంటే విరక్తి పుట్టింది. ఆరేళ్లపాటు కాంగ్రెసుకు దూరంగా ఉండి, నా సమయమంతా ఆర్య సమాజ్‌కే వెచ్చించాను. దయానంద స్వామి బోధలకు అనుగుణంగా వైదిక పద్ధతిలో గురుకులాన్ని స్థాపించాలని నిర్ణయం అయ్యాక, నేను పూర్తిగా ఆ పనిలో నిమగ్నమయ్యాను. గురుకుల్ భావనను ప్రచారం చేస్తూ, విరాళాలను సేకరిస్తూ ఉత్తర భారతమంతా నేను తిరుగుతూండగా 1999 డిసెంబరులో కాంగ్రెసు కాంగ్రెసు వార్షిక మహాసభలు లక్నోలో జరగనున్నట్టు తెలిసింది. గురుకుల్ సందేశాన్ని దేశమంతటికీ చేరవేయడానికి అది మంచి అవకాశమని తలచి నేను అక్కడికి చేరాను.

అప్పటికి రూల్సు మారాయి. డెలిగేట్ల రుసుము పది రూపాయలు.వారికి బస, భోజన సదుపాయం ఉచితం. డెలిగేట్లు కాకుండా సభలను చూడవచ్చిన వారి వద్ద మాత్రం ఆహారం, బస వగైరా ఖర్చుల కింద పది రూపాయలు వసూలు చేసేవారు. నేను డెలిగేటును కాదు. కాబట్టి గెస్టు చార్జిల కింద పది రూపాయలు కట్టాను. అంతలో లాహోరు కాంగ్రెసు సెక్రటరీ నన్ను చూసి గబగబ వచ్చాడు. 'ఎలాగూ పది రూపాయలు కట్టావు కదా? అందుకని డెలిగేటుగానూ పేరు రాయించుకో' అని సలహా ఇచ్చాడు. 'అది మోసం; అలా చెయ్యను' అని నేను తిరస్కరించాను. కాని - చిత్రం! నేను రీ దరఖాస్తూ పెట్టకుండానే, ఏ కాగితం మీదా సంతకం చేయకుండానే నన్ను డెలిగేటుగా గుర్తిస్తూ ధ్రువీకరణ పత్రం జారీ అయింది. ఇదెక్కడి గోల అని నేను అనుకుంటూండగా బాబు గంగాప్రసాద్ వర్మ నన్ను గుర్తు పట్టి మహాసభ వేదిక మీదికి నన్ను రెక్కపుచ్చుకు లాక్కెళ్లాడు.

పై నుంచి చూస్తే ఇంకో వింత కనిపించింది. 1893 లాహోర్ కాంగ్రెసుతో పోలిస్తే ముస్లిం డెలిగేట్ల సంఖ్య నాలుగింతలు పెరిగింది. వారందరూ ముతక బట్టల మీద బంగారు, వెండి జలతారు ఉన్న పట్టు &ంగరఖాలు వేసుకుని ఉన్నారు. మెల్లిగా వాకబు చేస్తే తెలిసింది. లక్నోలోని సంపన్న హిందువులు 'కాంగ్రెసు తమాషా' కోసం వాటిని కుట్టించి పంచారట. మొత్తం ముస్లిం డెలిగేట్ల సంఖ్య 433. వారిలో 30 మంది మాత్రమే

పై నుంచి చూస్తే ఇంకో వింత కనిపించింది. 1893 లాహోర్ కాంగ్రెసుతో పోలిస్తే ముస్లిం డెలిగేట్ల సంఖ్య నాలుగింతలు పెరిగింది. వారందరూ ముతక బట్టల మీద బంగారు, వెండి జలతారు ఉన్న పట్టు అంగరఖాలు వేసుకుని ఉన్నారు. మెల్లిగా వాకబు చేస్తే తెలిసింది. లక్నోలోని సంపన్న హిందువులు 'కాంగ్రెసు తమాషా' కోసం వాటిని కుట్టించి పంచారట. మొత్తం ముస్లిం డెలిగేట్ల సంఖ్య 433. వారిలో 30 మంది మాత్రమే బయటి నుంచి వచ్చారు.

బయటి నుంచి వచ్చారు. మిగతా అందరూ లక్నోవాళ్లే. వారిని కూడా ప్రతినిధి రుసుము, బస, భోజనం చార్జి ఏమీ లేకుండా తేరగా పట్టుకొచ్చారు.

సర్ సయ్యద్ అహమ్మద్ ఎంతగా వెనక్కి లాగినా లక్ష్యపెట్టకుండా మహమ్మదీయులు పెద్ద సంఖ్యలో కాంగ్రెసు సభలకు హాజరయ్యారని ప్రపంచానికి చాటటానికి నిర్వాహకులు చాలా ప్రయాసపడ్డారు. ఉర్దూలో ప్రవేశపెట్టిన తీర్మానాన్ని బలపరచడానికి లేచిన ప్రతివాడూ 'హజరత్! నేను మహమ్మదీయ డెలిగేటును' అని మొదలెడతాడు. వెంటనే హిందువులు దిక్కులది రేట్టు చప్పట్లు కొడతారు.

ఈ 'ప్రదర్శన' నడుస్తూండగా లోకమాన్య తిలక్ సభాస్థలంలోకి డెలిగేటుగా ప్రవేశించాడు. మామూలుగా బొంబాయి డెలిగేట్ల సరసన కూచోబోతుండగా ఎవరో ఆయనను గమనించి, వేదిక మీదికి రమ్మని సైగ చేశారు. జైలు నుంచి అప్పుడే విడుదలైన మహా నాయకుడిని గుర్తుపట్టి సభలోని వారు, వేదిక మీది వారు దాదాపు అందరూ దిగ్గున లేచారు. కరడుగట్టిన మితవాదులు, మతవాదులు కొందరు మాత్రమే కూచుని ఉన్నారు. ఈ తీవ్రవాది ఎందుకు దాపురించాడు, ఏమి కొంప ముంచుతాడో అన్న కంగారుతో వారి మొహాలు పాలిపోయాయి. కాని లోకమాన్యుడు తన ఆసనం నుంచి కదలడానికి ససేమిరా ఇష్టపడలేదు. దాంతో సంక్షోభం గడచింది. మితవాదులు తేలిగ్గా ఊపిరి పీల్చుకున్నారు. లక్నో కాంగ్రెసులో కాంగ్రెసు వారి నీతి బాహ్యతను బయటపెట్టే సంఘటనలు ఇంకా చాలా జరిగాయి.

మరునటి సంవత్సరం (1900)

లాహోర్‌లో జరిగిన కాంగ్రెస్ వార్షిక మహాసభకు అధ్యక్షత వహించిన నారాయణ చందావర్కర్ ఆ తరవాత కొద్ది కాలానికే బొంబాయి హైకోర్టులో జడ్జి అయ్యాడు. నేషనల్ కాంగ్రెస్ అధ్యక్షత్వం హైకోర్టు బెంచిలో చేరడానికి రహదారి అని అప్పట్లో అనుకునేవారు.

కాంగ్రెసులో తన అనుభవాలను పూసగుచ్చినట్టు వివరిస్తూ స్వామి శ్రద్ధానంద రాసిన *Inside Congrsess* గ్రంథం (17-34 పేజీలు)లోని విశేషాలకు స్వేచ్ఛానువాదమిది. నేషనల్ కాంగ్రెసు అనేది తెల్లవాళ్లు ఆడించిన రాజకీయ బొమ్మలాట అన్న అనుమానం ఈ పుస్తకం చదివితే రూఢి అవుతుంది.

ఇందులో ఆశ్చర్యపడాల్సింది ఏముంది? తొలి దశలో కాంగ్రెస్ బతుకు అంతేనని అందరూ ఎరిగిందే. గాంధీ మహాత్ముడు అడుగుపెట్టి స్వాతంత్ర్య శంఖం పూరించాకే కాంగ్రెస్ గతి మారింది. అహింసాత్మక స్వాతంత్ర్య మహా పోరాటానికి చోదకశక్తిగా అది చరితార్థమైంది - అని మీరంటారా?

స్వామి శ్రద్ధానంద కూడా మొదట్లో అలాగే అనుకున్నాడు. గాంధీ బోధలను త్రికరణశుద్ధితో నమ్మాడు. అంతదాకా కాంగ్రెసుకు దూరమైనవాడు మహాత్ముని పిలుపునందుకుని జాతీయోద్యమంలోకి దూకాడు. తరవాత ఏమైంది?

కాల్చండిరా నన్ను!

'మీ మహాత్మాగాంధికి కొత్తగా ఇంకో విపరీత బుద్ధి పుట్టింది చూశావా?'

శ్రద్ధానంద వెళ్లీ వెళ్లగానే 'ది రైట్ అనరబుల్' వి.ఎస్. శ్రీనివాస శాస్త్రి అన్న మాట ఇది.

శ్రీనివాస శాస్త్రి సామాన్యుడు కాదు. గొప్ప దేశభక్తుడు. మహా మేధావి. జగమెరిగిన వక్త. గాంధి దక్షిణాఫ్రికాలో తెల్లదొరతనాన్ని కడు విధేయంగా సేవించుకుంటున్న కాలంలోనే భారత జాతీయ కాంగ్రెసు అగ్రశ్రేణి నాయకుల్లో ఒకడుగా పేరు పొందినవాడు. గాంధికి రాజకీయ గురువైన గోపాలకృష్ణ గోఖలే పెట్టిన 'సర్వెంట్స్ ఆఫ్ ఇండియా సొసైటీ'కి గాంధిగారు ఇండియా తిరిగొచ్చేటప్పటికే అధ్యక్షుడుగా ఉన్నవాడు. ఆ సొసైటీలో చేర్చుకోవటానికి వెర్రి ఆలోచనల గాంధి ఎంత మాత్రమూ పనికిరాడని మొట్టమొదటి కళాఖండిగా తిరస్కరించినవాడు.

అప్పటికి శ్రీనివాస శాస్త్రి తీంకా ప్రివీ కౌన్సిల్ మెంబరు కాలేదు. ఇంపీరియల్ లెజిస్లేటివ్ కౌన్సిలులో మెంబరుగా ఉన్నాడు. ఆ హోదాలోనే, బ్రిటిష్ ప్రభుత్వం దుర్మార్గంగా తెచ్చిపెట్టిన రౌలట్ బిల్లులను చట్టసభలో తీవ్రంగా వ్యతిరేకించాడు. లెజిస్లేటివ్ కౌన్సిల్‌లో తెల్లవారి రాక్షస శాసన ప్రతిపాదనలను చీల్చి చెండాడుతూ శ్రీనివాస శాస్త్రి చేసిన అనర్గళ ప్రసంగం యావద్భారతాన్నీ ఉర్రూతలూపింది.

స్వాతంత్ర్య కాంక్షతో భగభగ రగిలిపోతున్న భారత జాతిని ఉక్కు పాదాలతో అనగదొక్కడానికి బ్రిటిష్ పాలకులు తలపెట్టిన రౌలట్ బిల్లుల ప్రకారం.... ప్రభుత్వానికి బ్రిటిష్ పాలకులు తలపెట్టిన రౌలట్ బిల్లుల ప్రకారం.... ప్రభుత్వానికి వ్యతిరేకంగా పని చేస్తున్నట్టు అను మానం వస్తే చాలు ఎవరినైనా ఎక్కడైనా ఎంతకాలమైనా నిర్బంధించవచ్చు; ఉన్నచోటి నుంచి వెళ్లగొట్టవచ్చు; ఎలాంటి పెనాల్టీలైనా వేయవచ్చు.

విదేశీ పీడను విరగడ చేసేందుకు ఉరకలేస్తున్న విప్లవ భారతానికి మాత్రమే కాక తెల్లవారితో సర్దుకుపోయి, లౌక్యంగా కార్యం సాధించాలని చెప్పే మితవాదులకు కూడా కొత్త శాసనం ఒళ్లు మండించింది. ప్రజల తీవ్రాందోళనను గుర్తించి ప్రభుత్వం వెనకడుగు వేయకపోతే లెజిస్లేటివ్ కౌన్సిల్‌లో భారతీయ సభ్యులందరూ వాకౌట్ చేస్తే బాగుంటుందని మదన్ మోహన్ మాలవ్యా లాంటి పెద్దలు తలపెట్టారు. ఆ రోజుల్లో వాకౌట్ అనేది అనివార్య పరిస్థితుల్లో అరుదుగా వాడే నిరసన ఆయుధం. మిగతా సభ్యులు ఎందరు పాల్గొన్నా శ్రీనివాస శాస్త్రి కనుక కలిసి రాకపోతే ప్రయోజనం ఉండదు. ఎలాగైనా అయనను ఒప్పించే బాధ్యతను స్వామి శ్రద్ధానంద మీద పెట్టారు. ఆ సందర్భంలో కలిసినప్పుడే పై సంభాషణ జరిగింది.

ప్రజల స్వేచ్ఛను కిరాతకంగా కాలరాచేందుకు ఉద్దేశించిన నల్లబిల్లును ఎలాగైనా నిరోధించాలని తమ వంటివారు సర్వశక్తులూ ఒడ్డి చట్టసభ లోపలా బయటా పోరాడుతూంటే, నడమంత్రంగా ఊడిపడ్డ ఈ గాంధీ సత్యాగ్రహం గిత్యాగ్రహం అంటూ పనికిమాలిన ఆలోచనలు చేస్తున్నాడేమిటని శ్రీనివాస శాస్త్రి చికాకు. ఆయనకే కాదు; ఆ కాలాన జాతీయ జీవితంలో ప్రముఖ స్థానాల్లో ఉన్న వారెందరికో గాంధి అన్నా, అతడి చేదస్తాలన్నా చిన్నచూపు.

దానికీ బలమైన కారణాలున్నాయి. బెంగాల్ విభజన అనంతరం స్వదేశీ ఉద్యమం వెల్లువెత్తి విదేశీ పాలనకు వ్యోతిరేకంగా దేశమంతటా వేలాది యువతీ యువకులు ఏకదీక్షగా పోరాడుతూండగా... జాతీయ అలజడిని అణచివేయడానికి బ్రిటిష్ సర్కారు దారుణ దమననీతిని అనుసరిస్తున్న భయ విహ్వల స్థితిలో... మోహన్‌దాస్ గాంధి దక్షిణాఫ్రికాలో అదే బ్రిటిష్ ప్రభువుల ముందు సాగిలపడి అతి విధేయత ప్రకటించుకున్నాడు. విధేయతను నిరూపించుకునే తహతహలో 1906లో దక్షిణాఫ్రికాలో జులూ జాతీయుల తిరుగుబాటును తొక్కివేయటానికి తెల్లదొరతనానికి శాయశక్తులా సహాయం చేశాడు. ఇండియా నుంచి వచ్చి స్థిరపడ్డ వారికి అవమానకరమైన శాసనాలను తెగబడి చేసిన నాటాల్ గవర్నమెంటుకు బాసటగా తీండియన్ అంబులెన్స్ దళాన్ని పెట్టి ఆఫ్రికన్లను వేటాడటానికి తోడ్పడ్డాడు. రాజకీయ విముక్తి కోసం భారతీయులు పరితపించి, భీకర పోరాటం సాగిస్తున్న సమయంలో అదంతా అర్థంలేని ఆవేశం అయినట్టు గాంధి చులకన చేశాడు. 'ఎవరు పాలిస్తున్నారు అన్నది నాకు అనవసరం. ఎలా పాలిస్తున్నారు అన్నదే నాకు ముఖ్యం' అని 1908 అక్టోబర్ 9న ఆయన మద్రాసు

యుద్ధకాలంలో వేల మందిని ఊచకోత కోసే ఘోర సంగ్రామంలో సైనికుల సేకరణకు అహింసా ప్రవక్త యథాశక్తిగా తెల్లవారికి అండదండలందించాడు. అదేమని అడిగితే - కష్టకాలంలో వారికి మనం సాయపడితే వారు మనకు కృతజ్ఞులై యుద్ధం కాగానే మనకు అడక్కుండానే ఉపకారాలు చేస్తారని ఊరించాడు. యుద్ధంలో గెలవగానే భారతీయులకు మెచ్చి మేకతోలు కప్పి పంచభక్ష్య పరమాన్నాలతో విందు చేస్తారని గాంధిలాంటి అమాయకులు అనుకుంటే తెల్లదొరతనం కంచం నిండా కరకు ఆంక్షల రాళ్లు వడ్డించింది.

గవర్నరుకు రాశాడు. ఎంతటి సుపరిపాలన అయినా స్వపరిపాలనకు ప్రత్యామ్నాయం కాజాలదని మహామహా బ్రిటిష్ రాజనీతిజ్ఞులే ఘోషిస్తుండగా, ఇతగాడే మిటి – బాగా పాలిస్తే చాలు విదేశీ పెత్తనమైనా ఫరవాలేదు అంటున్నాడు – అని మన విజ్ఞులు సహజంగానే విసుక్కున్నారు. పార్లమెంటరీ ప్రజాస్వామ్యం పడుపుగత్తెల వ్యవహారం.. ఆధునిక నాగరికత అన్ని విధాల అరిష్టం.. వగైరా వెర్రిమొర్రి ఉపదేశాలతో గాంధి వెలువరించిన 'హింద్ స్వరాజ్' పుస్తకం ఆ రోజుల్లో మేధావి వర్గాల్లో పెద్ద పరిహాసం! టాల్‌స్టాయ్, థోరోల నుంచి అరువు తెచ్చుకున్న భావాలతో తాను గందరగోళంలో పడి ఇతరులను అయోమయంలోకి నెట్టటమే తప్ప భారత రాజకీయ రంగంలో వీస్తున్న గాలులు ఎలాంటివి, వాటి తాత్విక భూమిక ఏమిటి అన్న అవగాహన గాంధీకి లేదు. 'సత్యాగ్రహా'నికి తానే తండ్రిని; తానే గురువుని అని అహంకరించి తన వల్లే ప్రపంచానికి ఆ ఆయుధం దొరికినట్టు తెగ మురిసిన గాంధికి, దక్షిణాఫ్రికాలో తాను మొట్టమొదటి సత్యాగ్రహ ప్రయోగం చేయడానికి చాలామందే అరవిందఘోష్ అహింస, సహాయ నిరాకరణలను ప్రజా పోరాట సాధనాలుగా విడమర్చి ప్రవచించిన సంగతి తెలియదు.

ఆలోచనల సంగతి అలా ఉంచితే, జాతి హితాన్ని ఎలా సాధించాలన్న దగ్గరా గాంధికి, మిగతా జాతీయ ప్రముఖులకూ ఎప్పుడూ షష్టాష్టకమే. మొదటి ప్రపంచ యుద్ధంలో భారతీయుల సహకారం బ్రిటిషు వారికి అత్యవసరం కనుక దాని ఆసరాగా తీసుకుని, భృత్యాన్ని ఇరుకున పెట్టి కార్య సాధిద్దామని చాలామంది అంటే గాంధి ససేమిరా ఒప్పుకోలేదు. యుద్ధకాలంలో వేల మందిని ఊచకోత కోసే ఘోర సంగ్రామంలో సైనికుల సేకరణకు అహింసా ప్రవక్త యథాశక్తిగా తెల్లవారికి అండదండలందించాడు. అదేమని అడిగితే – కష్టకాలంలో వారికి మనం సాయపడితే వారు మనకు కృతజ్ఞులై యుద్ధం కాగానే మనకు అడక్కుండానే ఉపకారాలు చేస్తారని ఊరించాడు.

అదీ వట్టిదే అయింది. యుద్ధంలో గెలవగానే భారతీయులకు మెచ్చి మేకతోలు కప్పి పంచభక్ష్య పరమాన్నాలతో విందు చేస్తారని గాంధిలాంటి వారు ఆశిస్తే తెల్లదొరతనం కంచం నిండా కరకు అక్షల రాళ్లు వడ్డించింది. ఈ దాష్టీకాన్ని ఎలా ఎదుర్కోవాలా అనితల పండిన దిగ్గంతులు ఒకవంక బుర్రలు బద్దలు కొట్టుకుంటూంటే – ఈ గాంధి మళ్లీ ఒంటిచేత్తో సత్యాగ్రహం చేసి దేశాన్ని ఉద్ధరిస్తాననడమేమిటని శ్రీనివాసశాస్త్రి ఫిర్యాదు.

సత్యాగ్రహ మంత్రం ఊహించిన దానికంటే బ్రహ్మాండంగా పని చేసింది. తెల్లవారి దుష్టపాలన అంటే రోతపుట్టి, స్వరాజ్యం కోసం ఆవురావురుమంటున్న లక్షలాది దేశభక్తులకు అది ప్రణవమైంది. దేశమంతటా గొప్ప కదలిక వచ్చింది. ముంబయి వారి అనుమతి తీసుకుని, వారు పెట్టిన కరకు షరతులకు లోబడి పలుచోట్ల సత్యాగ్రహ సభలు వెలిశాయి.

శ్రద్ధానంద సన్యాసి తన చెంతకు రాగానే 'లీడర్' పత్రికలో ప్రచురించిన గాంధిగారి సత్యాగ్రహ ప్రతిజ్ఞను చూపించి, 'ఇది చూడండి. దీనిని నేను గట్టిగా వ్యతిరేకించాలనుకుంటున్నాను' అన్నాడు రైటానరబుల్' శాస్త్రి.

'దీన్ని బహిరంగపరిచే ముందు ఆయన మిమ్మల్ని సంప్రదించలేదా?'

'ఆహా! నాకే కాదు. దీని ప్రతిని వైస్రాయి, కౌన్సిల్ మెంబర్లు సహా అందరికీ పంపాడు. తాను అనే దానిలో తప్పుంటే తనను ఒప్పించమన్నాడు కూడా'

'మరింకేం? ఆయన అంటున్న దానిలో తప్పేముంది? మానవ హక్కుల ప్రాథమిక సూత్రాలకు తగ్గట్టే మాట్లాడుతున్నాడు కదా? మీకు ఇష్టంలేకపోతే చేరకండి. కాని ఉద్యమాన్ని ఎందుకు వ్యతిరేకించటం?'

అవతలి పెద్ద మనిషి ఎంతకూ వినకపోయేసరికి చిర్రెత్తి 'ఇప్పటి దాకా అనుకోలేదు. కాని ఈ క్షణమే నిర్ణయించుకున్నాను. సత్యాగ్రహంలో నేనూ చేరబోతున్నాను' అని ప్రకటించాడు. శ్రద్ధానంద.

బయటికి వచ్చీరాగానే 'సత్యాగ్రహ శపథం మీద ఇప్పుడే సంతకం చేశాను. ధర్మయుద్ధంలో చేరుతున్నందుకు సంతోషిస్తున్నాను' అని గాంధిగారికి టెలిగ్రాం పంపాడు.

శ్రీనివాస శాస్త్రి లాంటి వారు గాంధి మార్గాన్ని ఎందుకు వ్యతిరేకించారు అన్నది చేదు అనుభవాలతో తలబొప్పి కట్టాకగానీ శ్రద్ధానందకు బోధపడలేదు.

సత్యాగ్రహ సైన్యంలో చేరే సమయానికి దాని సిద్ధాంతాలు, విధి విధానాలు ఏమిటన్నది ఆ స్వామికి తెలియవు. ఏ రకమైన శాసనాలు ఉల్లంఘించాలో నిర్ణయించే కమిటీ ముంబయిలో ఉంటుంది. ఒకరకంగా ఈ ఉద్యమమంతా ఒకేచోట కేంద్రీకృతమై నడుస్తుంది. శాసనోల్లంఘన సమర్థంగా సాగాలంటే స్థానిక కార్యకర్తలకు స్వేచ్ఛ ఉండాలి అని శ్రద్ధానంద తలచాడు. ముఖాముఖి మాట్లాడి అన్నీ తేల్చుకుందామని ముంబయి వెళ్లి 'ఇంతకీ మీరు ఏమి చేద్దమనుకుంటున్నారు?' అని మహాత్ముడిని అడిగాడు. పోలీసులకు ముందుగా తెలియపరచి నిషిద్ధ సాహిత్యాన్ని అమ్మాలని అనుకుంటున్నట్టు ఆయన చెప్పాడు. అలా చేస్తే అధికారులు ఫక్కున నవ్వుతారని శ్రద్ధానందకు అనిపించింది. తనకు తోచిన ప్రిపాదనలు కొన్ని మహాత్ముడి ముందు పెట్టాడు. 'పంచాయతీ న్యాయ స్థానాలను ప్రారంభిద్దాం. ఆ రకంగా బ్రిటిష్ కోర్టులను పైకి చెప్పకుండానే బహిష్కరిద్దాం. 1919 అక్టోబరులో ఖరీఫ్ వసూళ్లనాటికి కనీసం పది జిల్లాలను భూమిశిస్తులు, పన్ను చెల్లింపుల నిరాకరణకు సిద్ధం చేద్దాం. నా వరకు నేను పంజాబ్‌లో పది జిల్లాలను తయారుచేయగలను. గుజరాత్‌లో మీరు ఇంకో ఐదు జిల్లాలను సిద్ధం చేయండి చాలు. దేశమంతటా గొప్ప ప్రభావం పడుతుంది' అని ఉత్సాహపడుతూ సలహా ఇచ్చాడు.

దానికి మహాత్ముడు ఏమన్నాడు?

Mahatmaji smiled and said, "Bhai Saheb! you will acknowledge that I am in expert in Satyagraha business. I know what I am about". There could be no gain saying the fact and I bowed my head to his decision.

[*Inside Congress, Swami Shraddhanand*, PP.50-51]

(మహాత్మాజీ చిరునవ్వు నవ్వి 'భాయి సాహెబ్! సత్యాగ్రహ వ్యవహారంలో నేను నిపుణుడిని అని మీకు చెప్పక్కర్లేదు. ఏమి చేయాలో నాకు తెలుసు' అన్నారు. ఇక చేసేది లేక ఆయన నిర్ణయానికి నేను తలవంచాను.)

బ్రిటిషు సామ్రాజ్యానికి తాను ఎంత విధేయుడు అయినా, యుద్ధకాలంలో హోంరూల్ లాంటి డిమాండ్లతో ప్రభుత్వాన్ని ఇరుకున పెట్టటం తనకు ఇష్టం లేకపోయినా, అధికారులు నిరంకుశంగా వ్యవహరిస్తే సహించరాదని గాంధిగారి అభిప్రాయం. అందుకే అధికార దుర్వినియోగానికి ఆస్కారం ఉన్న రౌలట్ సిఫారసులను ఆయన వ్యతిరేకించాడు. వాటికి కనుక శాసన రూపం ఇస్తే సత్యాగ్రహానికి దిగుతానని హెచ్చరించాడు. వైస్రాయిని కలిసి ఎన్నివిధాల చెప్పినా, ప్రభుత్వం ఆయన బెదిరింపును లక్ష్యపెట్టలేదు. 1919 మార్చి 18న ఒక రౌలట్ బిల్లుకు వైస్రాయ్ ఆమోదం తెలిపాడు.

వెంటనే గాంధి కూడా రంగంలోకి దిగాడు. వల్లభ్‌భాయ్ పటేల్, సరోజినీదేవి లాంటి 20 మంది ప్రముఖులను సమావేశపరచి ముంబయిలో సత్యాగ్రహ సభ స్థాపించాడు. దానికి అధ్యక్షుడు గాంధీజీయే. కేంద్ర స్థానం ముంబయి. అక్కడి ప్రధాన సభ అనుమతి, ఆమోదం లేనిదే స్థానిక సత్యాగ్రహ కమిటీ ఏదీ అడుగు ముందుకు వేయటానికి వీల్లేదు. క్రమశిక్షణ కాపాడాలంటే ఆ కట్టడి అవసరమని మహాత్ముడు చెప్పాడు. రౌలట్ శాసనానికి వ్యతిరేకంగా మార్చి 30 ఒక్కరోజు దేశమంతటా పనులు మాని, వ్యాపార, విద్యా సంస్థలు కట్టేసి శాంతియుతంగా హర్తాళ్ జరపాలని పిలుపిచ్చాడు.

సత్యాగ్రహ మంత్రం ఊహించిన దానికంటే బ్రహ్మాండంగా పని చేసింది. తెల్లవారి దుష్పాలన అంటే రోతపుట్టి, స్వరాజ్యం కోసం అవురావురుమంటున్న లక్షలాది దేశభక్తులకు అది ప్రణవమైంది. దేశమంతటా గొప్ప కదలిక వచ్చింది. ముంబయి వారి అనుమతి తీసుకుని, పలుచోట్ల సత్యాగ్రహ సభలు వెలిశాయి.

రాజధాని ఢిల్లీ సంగతి సరేసరి. స్వామి శ్రద్ధానంద పూనికతో ఎం.ఎ. అన్సారీ అధ్యక్షతన సత్యాగ్రహ సభ ఏర్పాటైంది. వాడవాడలా చిన్నాపెద్దా మీటింగులు జరిగాయి. ఆర్య సమాజ్ నేతలు, మహమ్మదీయ మౌల్వీలు పక్కపక్కన కూచుని సత్యాగ్రహ సందేశం జనానికి వినిపించారు. అనుకున్న ప్రకారం మార్చి 30న హర్తాళ్ జరిపించటానికి సకల సన్నాహాలు జరిగాయి. మహాత్ముడు మనసు మార్చుకుని హర్తాళ్‌ను చివరి నిమిషంలో ఏప్రిల్ 6కు వాయిదా వేశాడు. ఆ కబురు ఢిల్లీకి ఆలస్యంగా చేరింది. ఆలోపే మార్చి 30 వచ్చింది. ముందుగా నిర్ణయించినట్టు చరిత్రాత్మకమైన హర్తాళ్ జరిగింది. ఎలాగంటే...

ప్రజలు స్వచ్ఛందంగా స్పందించారు. దుకాణాలు, పాఠశాలలు, కళాశాలలు అన్నీ కట్టేశారు. ఆ రోజు వీధుల్లో టాంగాలు కూడా తిరగలేదు. జనజీవితం పూర్తిగా స్తంభించింది.

రాజధానిలో ఈ ధిక్కారానికి తెల్లదొరతనం రెచ్చిపోయింది. పోలీసులను, గూర్ఖా రెజిమెంట్లను, సాయుధ శకటాలను భారీగా మోహరించి, ప్రజల మీదికి ఉసికొలిపింది. ఢిల్లీ రైల్వేస్టేషన్ దగ్గర, చా?ందినీ చౌక్‌లో పోలీసులు జనాన్ని నిష్కారణంగా చితకబాదారు. గూర్ఖా సైనిక దళాలు పిచ్చెత్తినట్టు మిషన్‌గన్లను కాల్చి పలువురి ప్రాణాలు తీశాయి. ఈ కబురు తెలిసి స్వామి శ్రద్ధానంద హుటాహుటిన వెళ్లేసరికి చాందినీ చౌక్ ప్రాంతం రణరంగంలా ఉంది. తూటాలు తగిలి కొందరు రోడ్డుమీద పడి ఉన్నారు. కొందరు నెత్తురోడుతూ గిలగిల లాడుతున్నారు. వేల జనం పోగయ్యారు. అడుగు ముందుకేస్తే కాల్చేస్తామంటూ భద్రతాబలగాలు గర్జిస్తున్నాయి. పొలికేకలతో, ఆర్తనాదాలతో, బూట్ల చప్పుళ్లతో, తుపాకి మోతలతో పరిస్థితి మహాభీభత్సంగా ఉంది.

స్వామీజీ రివ్వన వెళ్లి గూర్ఖా దళానికీ జనానికీ మధ్య నిలబడ్డాడు. ప్రశాంతంగా ఉన్న ప్రజల మీద ఎందుకు కాల్పులు చేస్తున్నారని గద్దించాడు. వెంటనే ఆయన మీదికి రెండు రైఫిళ్లు లేచాయి. తూట్లు పొడుస్తాం అని పొగరుగా అరిచారు గూర్ఖాలు.

స్వామీజీ బెదరలేదు. వెనక్కి తగ్గలేదు.

"నిలబడే ఉన్నా, కాల్చండిరా నన్ను" అంటూ రొమ్ము చూపించాడు.

వెంటనే ఆయన మీదికి తింకో ఏనిమిది రైఫిళ్లు లేచాయి. గురిచూసి ట్రిగ్గర్ నొక్కడమే తరువాయి. వద్దువద్దంటూ చుట్టూ జనం, హాహాకారాలు చేస్తూ ముందుకు దూసుకురాబోయారు. స్వామి చెయ్యెత్తి వారించాడు. ఎలాంటి పరిస్థితి ఎదురైనా సహనం కోల్పోమని మీరు ప్రమాణం చేశారు. మరచిపోకండి అని ఖంగున పలికాడు. 'మీరెందుకు చావాలి, మేమే చచ్చిపోతాం' అని జనం ఉద్వేగంగా అనసాగారు. తుపాకులు స్వామి ఎదకు గురిపెట్టే ఉన్నాయి. కాని కాల్చేందుకు సైనికులకు చేతులు రాలేదు.

అలా మూడు నిమిషాలు గడిచాక యూరోపియన్ ఆఫీసరు అటుకేసి గుర్రంమీద వచ్చాడు. పరిస్థితిని గమనించి సైనికులకు సైగ చేశాడు. సాయుధ బలగాలు పక్కకు తప్పుకుని తోవ ఇచ్చాయి. స్వామి శ్రద్ధానంద వెన్నంటి జన సమూహం ముందుకు సాగిపోయింది.

ఆనాడు పోలీసు కాల్పుల్లో మరణించిన వారికి శ్రద్ధాంజలి ఘటించే సందర్భంలోనే జరిగింది. మొదటి అధ్యాయంలో చెప్పుకున్న 'మసీదులో వేదమంత్రం' ముచ్చట.

– ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

सभा के नए प्रकाशन

वैदिक नित्य कर्म विधि

और

संस्कार विधि

पुस्तक विमोचन समारोह

१६ अगस्त २०१५, रविवार के दिन सायं ४-३० बजे

वैदिक नित्य कर्म विधि और संस्कार विधि

(हिन्दी संस्करण)

पुस्तकों का विमोचन समारोह होगा

स्थान : पंडित नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला, हैदराबाद

मुख्य वक्ता : श्री पोतुरी वेंकटेश्वर रावजी, डॉ. टी.वी. नारायण जी,

अध्यक्षता श्री विट्ठल राव जी प्रधान सभा

संयोजक श्री हरिकिशन वेदालंकार जी मंत्री सभा

శ్రావణ మాస వేద ప్రచారము

ఆర్య సమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి, సికింద్రాబాద్

1939లో వ్యవస్థాపిత శాఖ

1-9-137 & 138, పెద్దాతోకట్ట,

న్యూబోయిన్‌పల్లి, సికింద్రాబాద్, తెలంగాణ.

శ్రావణి వేదప్రచారం:

ఆగస్టు 14-08-2015 నుండి సెప్టెంబర్ 13-09-2015 వరకు

ఉ॥ 6.00 గం॥ల నుండి ఉ॥ 7.00 గం॥ల వరకు

అందరూ ఆహ్వానితులే

ప్రధాన్	కోశాధికారి	కార్యదర్శి
శ్రీ వరుణ్‌రాజ్	**శ్రీ అంజిరెడ్డి**	**శ్రీ బృహస్పతి**
ఉప ప్రధాన్	సహకార్యదర్శి	
శ్రీ జయవీర్	**శ్రీ వేదకుమార్**	

పూర్ణాహుతి

తేది:13-09-2015

ముఖ్య అతిథి: శ్రీ ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య గారు ప్రధాన్

శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు, మంత్రి

ప్రభుత్వం ప్రత్యేకంగా ప్రవేశపెట్టిన హరిత విప్లవంలో భాగముగా సభాధ్యక్షులు మరియు సభామంత్రి చేతుల మీదుగా మొక్కలు నాటెదము. వివరములకు సంప్రదించగలరు : 9652669732

श्रावण मास वेद प्रचार

आर्यसमाज न्यू बोइनपल्ली, सिकिन्द्राबाद, तेलंगाना

१९३९ में व्यवस्थापित शाखा

१-९-१३७, १३८ पेद्दा तोकट्टा

न्यू बोइनपल्ली, सिकिन्द्राबाद, तेलंगाना

श्रावणी वेदप्रचार :

अगष्ट १४-०८-२०१५ से सेप्टंबर १३-०९-२०१५ तक

प्रातः ६.०० बजे से प्रातः ७.०० बजेतक

सभी लोग आमन्त्रित है

प्रधान	कोशाध्यक्ष	कार्यदर्शि
श्री बरुणराज	**श्री अंजिरेड्डि**	**श्री बृहस्पति**
उपप्रधान		सहकार्यदर्शि
श्री जयवीर		**श्री वेदकुमार**

विवरण के लिए सम्पर्क कीजिए **सेल : ९६५२६६९७३२**

पूर्णाहुति

दिनांक : १३-०९-२०१५ के दिन रविवार होगा

इसके साथ साथ तेलंगाना सरकार द्वारा प्रवेश किए गए हरित विप्लव में सभा प्रधान श्री प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी और सभा मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार जी पौधे लगायेंगे और समयनुसार

...पृ. ९ का शेष

मनुश्य को इन वस्तुओं की परम आवष्यकता होगी। बिना इसके उसका काम नहीं चलेगा। उसने षरीर के अन्दर हमारे लिए मन व बुद्धि भी बनाई है। यदि ईष्वर को बुद्धि बनाने का ज्ञान था तो उसे यह ज्ञान तो अवष्य ही था कि मनुश्य मुंह से बोलेगा, कान से सुनेगा तो उसे भाशा की आवष्यकता भी होगी। भाशा के साथ–साथ उसे ज्ञान की भी आवष्यकता है जिससे वह सत्य व असत्य का निर्धारण कर सत्य को ग्रहण व असत्य को त्याग कर सके। अतः ईष्वर ने ही सश्टि के आरम्भ में भाशा के साथ ज्ञान भी मनुश्यों को प्रदान किया था। इस ज्ञान को देने की ईष्वर की प्रणाली वही है जिसका प्रकाष महर्शि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाष आदि ग्रन्थों में किया है तथा इस लेख के पूर्व भाग में किया गया है। यदि ईष्वर भाशा व वेदों का ज्ञान नहीं देता तो उसका सश्टि व प्राणी–मात्र की रचना करना व्यर्थ हो जाता। जो लोग कहते हैं कि ईष्वर ने भाशा व वेदों का ज्ञान नहीं दिया, हमें लगता है कि वह लेग स्वयं को विज्ञ व ईष्वर को मूर्ख समझते हैं। आत्मा नित्य व अनादि है। हमारे अनन्त व असंख्य जन्म व्यतीत हो चुके हैं। हम प्रायः सभी जीव–योनियों में अनेकों–अनेक बार रहे हैं। अनेक बार हमारा मोक्ष भी हुआ है। यह वेद भी, हम जब–2 मनुश्य बने, उनमें से अधिकांष योनियों में हमने सुनें, देखें, व पढ़ें हैं। आज फिर इन्हें देखने का सुअवसर परमात्मा व महर्पि दयानन्द की कष्या से प्राप्त हुआ है। हमें पूरी तन्मयता से वेदों का अध्ययन कर तथा मन्त्रार्थों में निहित रहस्यों को जानकर उनके अनुरूप अपना आचरण बनाकर व इसके साथ–साथ ध्यान–चिन्तन व ईष्वर की उपस्थिति का अनुभव कर, इस जीवन को सार्थक बनाना चाहिये। अन्य प्रकार से जीवन जीनें में ऐन्द्रिक, भौतिक व विपय सुख तो मिलेगा, परन्तु उससे आत्मा सुखी कदापि नहीं होगा। आत्मा की अवहेलना आगे चलकर महंगी पड़ेगी। इसका कारण यह है कि प्रत्येक सुख में कई दुःख जुड़े रहते हैं। सुखों की प्राप्ति में पुरूशार्थ कर धन व साधन प्राप्त करने में दुःख, सुखों के भोगने के बाद फिर पूर्व की स्थिति आने पर दुःख तथा सुख का परिणाम दुःख होता ही है। अधिक सुख भोगने से इन्द्रियों व षरीर के षिथिल पड़ने व रोग आदि के होने से भी दुःख होता है जिसे परिणाम दुःख कहते हैं। अतः मित्रों, सावधान, आत्मा को जानों, पहचानों, ईष्वर की भक्ति, उपासना को अपना कर आत्मा को संतश्प्त व सन्तुश्ट कर जीवन को सफल करो।

शेष अगले अंक में

फो न:09412985121

ఆహ్వానము

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర. తెలంగాణ

మహర్షి దయానందమార్గము, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద

అధ్వర్యంలో

ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్

సౌజన్యంతో

జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము

మరియు

ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది 29-8-2015 శనివారము ఉ॥ 9-00గం॥ల నుండి

ఆర్య ప్రతినిది సభ ఆం.ప్ర.-తెలంగాణ మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్ హైద్రాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్ **వారి సౌజన్యంతో** జంటనగరాల ఆర్య సమాజాల సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము (శ్రావణి పూర్ణిమ) తేది 29-8-2015 శనివారము నాడు నిర్వహించబడును కావున ఆర్య బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతంగా సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము. అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరని మనవి. ఈ కార్యక్రమములో స్వామి శ్రాద్ధానంద్ గారి గురించి తెలుగులో ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు ద్వారా రాసిన పుస్తక సందర్భములో శాస్త్రి గారికి సన్మానము చేయబడును. ఈ కార్యక్రమంలో విశిష్ట అతిథులుగా శ్రీ పొత్తూరి వెంకటేశ్వర్ రావు గారు, శ్రీ బి. నర్సింగ్ రావు గారు, శ్రీ సి.హెచ్. రాజేశ్వర్ రావు గారు మరియు శ్రీ యం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు ఆహ్వానింపబడినారు. ఆర్య సత్యగ్రహ అమరవీరులకు మరియు నైజాం కాలములో అమరులైన వీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటించెదము కావున తామెల్లరు సకుటుంబముగా విచ్చేసి కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరని మనవి.

యజ్ఞబ్రహ : గౌ॥ ఆచార్య వసుధాశాస్త్రి గారు,
ఆచార్య అరవింద శాస్త్రిగారు,
: గౌ॥ ప్రియదత్త గారు

ముఖ్య అతిథి : పొత్తూరి వెంకటేశ్వర్ రావు గారు,
శ్రీ బి. నర్సింగ్ రావు గారు,
శ్రీ సి.హెచ్. రాజేశ్వర్ రావు గారు
శ్రీ యం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు

అధ్యక్షత : గౌ॥ విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ

విధ్వాంసులు : డా॥ టి.వి. నారాయణ గారు, ఉపప్రధాన్
: శ్రీ హరికిషన్ వేదా లంకార్, మంత్రి
: శ్రీ వెంకట్ రఘురాములు గారు

సంయోజకులు : శ్రీ లక్ష్మణ్ సింగ్ గారు
ఉప ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ

భజన్ : భజన్ మండలి

వందన సమర్పణ : ఆర్యసమాజము ఆర్.పి. రోడ్, సికింద్రాబాద్

భవదీయులు

ప్రధాన్ మంత్రి	ప్రధాన్ మంత్రి
ఆర్యసమాజము, ఆర్.పి. రోడ్, సికింద్రాబాద్.	ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

ठ

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना

के तत्वावधान मे

आर्य समाज आर. पी. रोड, सिकंदराबाद के सौजन्य से

नगर द्वय की आर्य समाजों का

सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं

आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दिनांक : २९-०८-२०१५ शनिवार

प्रातः ९-०० बजे से

स्थान : आर्य समाज आर.पी. रोड, विद्यालय प्रांगण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-त्तेलंगाना, हैदराबाद के तत्वावधान में आर्य समाज आर.पी. रोड, सिकंदराबाद के सौजन्य से नगर द्वय की आर्य समाजों का सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक : २९-०८-२०१५ शनिवार के दिन आर्य समाज आर.पी. रोड, विद्यालय प्रांगण मनाया जा रहा है। सभी आर्य बन्धु सपरिवार पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्दजी पर तेलुगु में श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी द्वारा लिखि गई पुस्तक के संदर्भ में श्री शास्त्रीजी का सम्मान किया जाएगा । इस अवसर पर आर्य सत्याग्रह एवं निजाम के काल के अत्याचारों का डट कर विरोध करने वाले शहिदों को श्रद्धांजलि दी जाएगी । इसमें श्री पोत्तुरी वेंकटेश्वर रावजी, श्री बी. नर्सिंग राव जी, श्री सी.एच. राजेश्वर रावजी एवं वैदिक विद्वान आमंत्रित है।

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्या वसुधा शास्त्री जी,
: आचार्य अरविंद शास्त्री जी
: श्री प्रियद्दत शास्त्री जी

मुख्य अतिथि : श्री पोत्तुरी वेंकटेश्वर रावजी,
श्री बी. नर्सिंग राव जी,
श्री सी.एच. राजेश्वर रावजी,
श्री एम.वी.आर. शास्त्रीजी

अध्यक्षता : श्री विठ्ठलराव आर्य प्रधान सभा

भाग लेने वाले विद्वान : डॉ. टी.वी. नारायण जी, उप प्रधान सभा
: श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री सभा

संयोजक : श्री लक्ष्मण सिंह जी उप प्रधान सभा

भजन : भजन मंडली

धन्यवाद : आर्यसमाज, आर.पी. रोड, सिकंदराबाद

भवदीय

प्रधान मंत्री	प्रधान मंत्री
आर्य समाज	आर्य प्रतिनिधि सभा
आर.पी. रोड सिकंदराबाद,	सुल्तान बाजार, हैद्राबाद

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में लिया गया महत्त्वपूर्ण निर्णय

पर्यावरण शुद्धि के लिए सारे देश में

पेड़ लगाने का अभियान चलायेगा आर्य समाज

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने

समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों, गुरुकुलों के संचालकों, शिक्षण संस्थाओं तथा युवा संगठनों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान किया

विगत 9 जुलाई, 2015 को सम्पन्न हुई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया जिसमें पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से सारे देश में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के क्रियान्वयन के लिए सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने संयुक्त रूप से समस्त आर्यों, आर्य समाज के पदाधिकारियों, गुरुकुलों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा अन्य संस्थाओं से अपील की है कि सब मिलकर पूरे देश में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लक्ष्य की पूर्ति हेतु अपने-अपने स्तर पर सक्रिय हो जायें।

स्वामी जी ने कहा कि आज सारे विश्व में पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। अमेरिका जैसे देश भी इस पर्यावरण असंतुलन से चिन्तित दिखाई दे रहे हैं। आज पर्यावरण की जो विकराल समस्या हमें दिखाई पड़ रही है उसके तीन मुख्य कारण है 1) वायु प्रदूषण, 2) जल प्रदूषण, 3) ध्वनि प्रदूषण। इन प्रदूषणों में सबसे मुख्य है वायु प्रदूषण। विश्व का पर्यावरण ही प्रदूषित होगा तो मनुष्य का शारीरिक, आत्मिक, मानसिक विकास भी प्रभावित होगा। यह समस्या पूरे मानव समाज और विश्व की ज्वलंत समस्या बन चुकी है। यदि हम अपने खेतों और वनों पर ही ध्यान केन्द्रित करें तो पायेंगे कि वनों के अन्धा धुन्ध कटाई से ऋतुयें

बदल रही हैं वर्षा प्रभावित हो रही है, नदियाँ प्रभावित हो रही हैं। वायु प्रदूषण के कारण प्रकृति का सौन्दर्य उसकी क्षमता, उसकी उपयोगिता जिस पर हमारा जीवन आश्रित है धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है। इसे रोकना अत्यन्त आवश्यक है।

वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ, प्रदूषण को दूर करने में सबसे उपयोगी है आर्य समाजों ने यज्ञ की परम्परा को जीवित रखा हुआ है। यज्ञ में सुगन्धित वनस्पतियाँ, औषधियाँ, स्वास्थ्यप्रद अनाज और शक्कर आदि को मिश्रित कर आहुतियाँ दी जाती हैं जिनसे वायुमण्डल शुद्ध होता है। इसी प्रकार हमारे वृक्ष और वनस्पतियाँ भी वायु मण्डल को शुद्ध करने में अत्यन्त सहायता प्रदान करते हैं। क्योंकि वृक्ष दूषित वायु को में ग्रहण करते हैं और उसी को दिन में सूर्य किरणों के समक्ष शुद्ध वायु में परिवर्तित कर वायु मण्डल में छोड़ देते हैं। अतः वृक्षों का होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि देश की धरती को पेड़-पौधे लगाकर हराभरा किया जायेगा और इसीलिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है। स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक आर्य समाज अपने क्षेत्र में पेड़ लगाने का अभियान चलाये। अधिक से अधिक पेड़ लगाने से सारी दुनिया का उपकार होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का मुख्य पर्व श्रावणी आ रहा है, अतः जहाँ हम स्वाध्याय पर बल दें, आर्य समाजों में उपदेश और गोष्ठियाँ करने पर बल दें वहीं इस पर्व के आने तक वृक्षारोपण पर भी विशेष ध्यान केन्द्रित करें और आम जनता को प्रेरित करें कि वह भी अधिक से

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-08-2015 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

अधिक पेड़ लगायें। पर्यावरण सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाना अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य यह संकल्प करे कि वह कम से कम 10 वृक्ष अवश्य लगायेगा या औरों को प्रेरित करके लगवायेगा। जितनी आर्य समाज की संस्थायें हैं चाहे वह गुरुकुल हैं, आश्रम हैं, विद्यालय हैं वे सभी विशेष रूप से वृक्ष लगाने का अभियान चलायें यदि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य एवं कार्यकर्ता इस दिशा में सक्रिय और प्रयत्नशील हो गया तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि करोड़ों वृक्ष अकेले आर्य समाज के प्रयास से लगाये जा सकेंगे और यह प्रयास विशेष रूप से पर्यावरण महायज्ञ के रूप में समझा जायेगा। पेड़ लगाना भी अपने आपमें एक बहुत बड़ा यज्ञ है इसलिए हम सभी इस दिशा में प्रयत्न करें और जहां-जहां भी ऐसा अभियान चले वे अपना समाचार सभा में अवश्य भेज दें ताकि उसे **'वैदिक सार्वदेशिक'** और **आर्य जीवन** पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके जिससे इस अभियान से और लोग भी प्रेरणा ले सकें।

एक पौधा लगाएं, क्योंकि...
50 साल में एक पेड़ हमारे इतने काम आता है

17.50 लाख रुपए की ऑक्सीजन का उत्पादन

41 लाख रुपए के पानी की रिसाइक्लिंग।

300 पेड़ मिलकर खत्म कर सकते हैं एक वयस्क व्यक्ति द्वारा जीवन भर में फैलाए गए प्रदूषण को

35 लाख रुपए के वायु प्रदूषण का नियंत्रण

3% के लगभग तापमान कम करता है।

3 किलो कार्बनडायआक्साइड सोखता है हर साल

18 लाख रुपए के जमीन के कटाव खर्च पर रोक

7 औषधीय पौधे अवश्य लगाए
7 वृक्ष लगाकर जीवन का कर्ज चुकाए

छुट्टियों में यह भी कर लें : घूमने-फिरने तो आप जाते ही हैं। बस साथ में निम्बोली (नीम का फल), आम, जामुन या ऐसे ही बीज ले जाएं और रास्ते में जो जगह आपकी यादगार या पसंद की जगह हो वहां इन्हें फेंकते चलें। बारिश आएगी तब देखना कि आपके बीजों से वृक्ष और फिर वृक्षों से वन-जंगल समृद्ध होते जाएंगे।

hindkush.in से साभार

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com

సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95 Ph.No. 24753827,Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विठ्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५

SCANNED
13 AUG 2015
Name.................